RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 27 अगस्त 2019/ पोस्टिंग तिथि 29 अगस्त

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका सितम्बर 2019

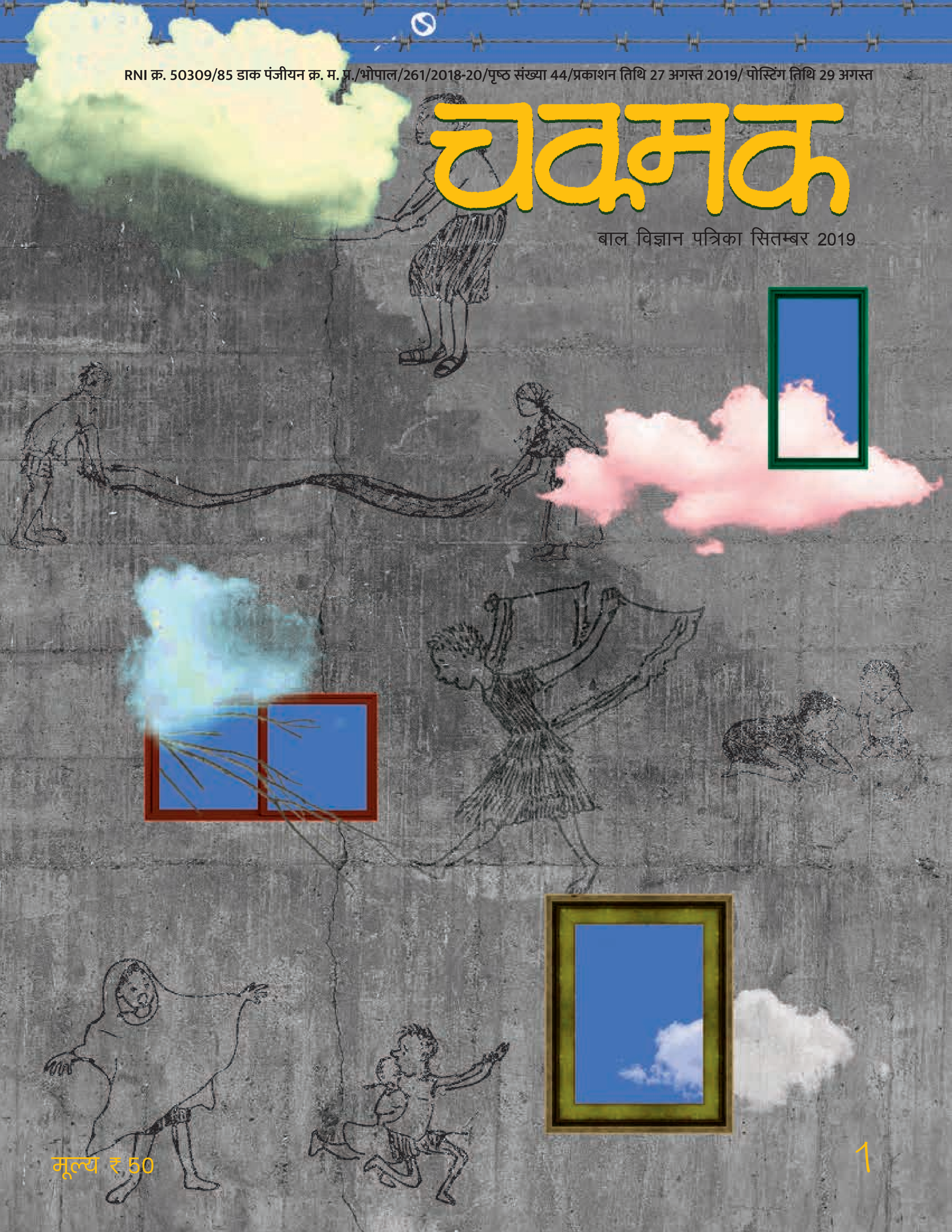

मूल्य ₹ 50

1

हमारी गाय

कोमल लोहे
चित्र: निहारिका शेनॉय

हमारे घर पर एक गाय हुआ करती थी। वो बहुत अच्छी थी। किसी को भी नहीं मारती थी। दूध भी अच्छा देती थी। माँ उसका बेहद खयाल रखती थीं। उसका चारा-पानी करना, गोबर निकालना, कभी-कभी उसको नहलाना सारे काम माँ ही करती थीं। दूध भी माँ ही निकालती थीं। मैं माँ के पीछे-पीछे रहती थी।

मुझे वो गाय बहुत पसन्द थी। उसे गर्दन के नीचे सहलाओ तो वो गर्दन हिलाती, आँखें बन्द कर शान्त हो जाती थी। शायद उसे भी मेरा प्यार करना पसन्द था।

एक बार उसे बछड़ा हुआ। 3-4 दिन ही हुए थे कि अचानक से वो मर गई। हम बहुत रोए। डॉक्टर के पास भी गए थे। लेकिन उसे भी शायद कुछ समझ नहीं आया था। उस रात मैंने और माँ ने खाना नहीं खाया।

किसी ने कहा, साँप ने काटा होगा तो किसी ने कुछ और कहा। हमारी समझ में भी कुछ नहीं आया।

माँ चार दिन तक दुखी थीं, नाराज़ थीं। गोठे की तरफ देखो तो सूना-सूना लग रहा था। अब हमारे घर में गाय नहीं है।

कोमल ज़िला परिषद उच्च प्राथमिक स्कूल, गोवारी, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र में छठवीं कक्षा की छात्रा है।

अंक 396 सितम्बर 2019

चकमक

इस बार

हमारी गाय - कोमल लोहे	2
खयालों में - लाल्टू	3
एक और बिस्तर - नन्दनी	4
कैसे बने अक्षर - रडयार्ड किपलिंग	7
गणित है मज़ेदार - आलोका कन्हेरे	10
सूर्य, तुम तपो - रुस्तम	12
किट्टू उड़नछू! - हर्षिका उदासी	13
क्यों-क्यों?	17
मेरे पापा की स्कूटर - सोनाली वाघमारे	19
पहली बार जब मैंने कहवा बनाया - सहर सलीम	20
इधर चलें हम, उधर चलें - नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउण्डेशन	22
तुम भी बनाओ - पपेट	24
पाली और चींटी - जसबीर भुल्लर	25
सोने से सुनहरा - सुशील जोशी	27
मेरे घर पर चीटियों का झुण्ड- काजल	29
खोपड़ी में इतनी हड्डियाँ क्यों हैं?	31
क्यों-क्यों?	32
तुम भी जानो	34
मेरा पन्ना	35
माथापच्ची	41
चित्रपहेली	43
भूल-भुलैया	44

खयालों में

लाल्टू
चित्र: कनक शशि

इक चिड़िया देखी तो उसे खयालों में रख लिया
देखा फूल तो सपनों में उसे देखता रहा
इस तरह मैं बारहा आज़ाद रहा
आस्मां में चिड़िया और बागों में फूल देखता रहा।

आवरण चित्र: इशिता देबनाथ बिस्वास

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी
सजिता नायर

सम्पादकीय सहयोग
भरत त्रिपाठी

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

डिज़ाइन
कनक शशि

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

वितरण
झनक राम साहू

सहयोग
कमलेश यादव

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं। एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य

एकलव्य फाउण्डेशन, जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026, फोन: +91 755 2977770 से 3 तक
email - chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in; www.chakmak.eklavya.in, www.eklavya.in

एक और बिस्तर

नन्दनी

चित्र: प्रशान्त सोनी

रोज़ की तरह दोपहर के करीब तीन या चार बज रहे होंगे। सभी गली में बातें करने में जुटे हुए थे। औरतें अपनी मण्डली में खोई हुई थीं और बच्चे स्कूल की थकावट दूर करने के लिए गली में दौड़ लगा रहे थे। पूरी गली में धूप बिखरी थी। बस कहीं-कहीं पर ही छाया थी, जिसका सहारा लेकर औरतें अपनी कहानियाँ बुनने में लगी थीं।

इतने में गली के कोने से एक अधेड़ उम्र की औरत भागते हुए दाखिल हुई। उसकी रंग-बिरंगी चुन्नी सिर से लेकर गले तक पड़ी हुई थी। वो गली के एक बड़े-से चबूतरे पर तीन-चार औरतों के बीच जा बैठी और बोली, “तुमने सुना, पिछली गली से दो बच्चे गायब हो चुके हैं।”

उस औरत को कोई जानता तो नहीं था। लेकिन वो इस तरह से उनके बीच में बैठी थी कि जैसे गली में वो सभी औरतों को जानती थी। बात ही कुछ ऐसी थी कि उसके लिए किसी के साथ खास रिश्ता बनाने की कोई ज़रूरत नहीं पड़ी।

वो फिर से बोली, “अरे! वही, समोसे वाले के पोते। बड़े दुखी हैं वो। मैं वहीं से आ रही हूँ।”

सभी औरतें सुन रही थीं। उस औरत की इस बात ने जैसे सभी को अपने में समा लिया था। उन्हीं के बीच बैठी एक औरत ने चौंकते हुए कहा, “वही, जिनका कोने वाला मकान है?”

“हाँ, हाँ वही।” वो हाँ में हाँ मिलाते हुए बोली।

उनके साथ वाली एक दूसरी औरत अपने पल्लू को और आगे खिसकाते हुए बोली, “उन पर क्या बीत रही होगी? उस माँ का क्या हाल हो रहा होगा?”

बात दो औरतों के बीच में घूम रही थी मगर उसका असर सभी पर छाया हुआ था। तभी साथ में बैठी अंजलि हड़बड़ी में उठी और ज़ोरों-से चिल्लाने लगी, “नन्नो, ओ नन्नो, कहाँ गई मेरी बच्ची?”

अंजलि को यहाँ पर सभी जानते हैं। कई बच्चों का अकेला सहारा है अंजलि। उसका घर हमेशा बच्चों से भरा रहता है। अनजान बच्चों के लिए उसका घर

खेलने की किसी जगह से कम नहीं है। एक ऐसा मैदान जहाँ पर कोई भी आकर खेल सकता है।

साथ वाले घर से निकलती चार या पाँच साल की लड़की ने कहा, “मम्मी, मैं तो अन्दर थी। टीवी देख रही थी।” अंजलि उसे अपनी गोद में बिठाती हुई बोली, “मेरी लाड़ो घर से बाहर मत निकलियो, कोई तुझे उठाकर ले गया तो मैं क्या करूँगी?” और वो बच्ची भौंचक्की-सी अपनी माँ को देखने लगी। अंजलि ने उसे अपनी गोद में ही बैठा लिया। औरतों के बीच की बातें थोड़ी धीमी-सी पड़ गई थीं, लेकिन बन्द नहीं हुई थीं।

दूसरी औरत चुप बैठी अंजलि से बोली, “तू घबरा क्यों रही है? कुछ नहीं होगा हमारे बच्चों को। देखते हैं कि कोई कैसे ले जाता है इन्हें।”

अंजलि कुछ नहीं बोली। पर वहाँ सभी उसकी इस बेचैनी को अच्छे-से जानती थीं।

सब खामोश हो गईं। कुछ ही देर में धीरे-धीरे सब कुछ सिमटने लगा। औरतें अपने-अपने घरों की ओर लौटने लगीं। बस बीच में रह गई वो बात, जिसने अपनी ही गली और उसमें आते नए लोगों को एक नए तरीके से देखने का नज़रिया दे दिया था।

थोड़ी ही देर बाद गली में एक ज़ोरदार आवाज़ हुई। सभी लोग एकदम से बाहर की ओर आए। देखा कि एक बच्चा बहुत ज़ोरों-से रो रहा था और यहाँ-वहाँ छुपने की कोशिश कर रहा था। सभी उसकी इस बेचैनी को देख रहे थे। कोई भी उसकी ओर नहीं जा रहा था। वो लगातार रोए जा रहा था। इतने में वो एक घर के चबूतरे पर जाकर लेट गया और कुछ देर के लिए शान्त हो गया। मगर अब आवाज़ें दूसरी तरफ बिखर रही थीं।

प्रेस वाले अंकल चिल्लाए, “अरे! किसका बच्चा है ये?”

सब्ज़ी वाले भैया, “पता नहीं! लगता है किसी और ही गली का है।”

एक औरत ने कहा, “अरे! देख तो लो, कहीं बेहोश तो नहीं हो गया।”

दूसरी औरत बोली, “बेचारा! ये तो गरम भी है।”

गली के दादाजी बोले, “देख क्या रही हो, उठाओ तो इसे। यहाँ ले आओ मेरी खाट पर।”

सभी उसे उठाकर वहाँ पर ले गए।

“लगता है कहीं और का है ये, यहाँ का तो नहीं लगता।”

“ये कहीं छूट तो नहीं गया? पिछली रात यहाँ पर बारात आई थी।”

“लग तो यही रहा है।”

“थोड़ी देर रुक जाओ, क्या पता कोई इसे ढूँढता हुआ आ जाए।”

“हाँ, हाँ, ऐसे ही कर लो।”

वो बच्चा तो जैसे सो चुका था। सभी उसके जागने का इन्तज़ार कर रहे थे और साथ ही उसे ढूँढते हुए आने वाले का भी। काफी देर हो चुकी थी। उसके मुँह पर पानी छिड़का गया, लेकिन वो फिर भी नहीं उठा। सभी में एक हड़बड़ी-सी उठने लगी। सभी उसे नज़दीक के डॉक्टर के पास ले जाने के लिए भागे।

“चलो, चलो उठाओ। कहीं लड़के को कुछ हो ना जाए?”

“अरे! पता तो करो। ये कहीं आसपास का ही तो नहीं है?”

गली के एक-दो लड़कों को यहाँ-वहाँ भेजा गया। आदमी उस लड़के को डॉक्टर के पास में ले गए। गली में सिर्फ औरतें रह गईं। उनके बीच में खुसुर-पुसुर होने लगीं।

कोई कहती, “बताओ, किसी के बच्चे को कोई उठाकर ले जाता है और किसी का बच्चा खो जाता है।”

“सही कह रही हो जीजी। दर्द तो दोनों ही सूरतों में होता है।”

“पता नहीं किसका बच्चा है?”

“मैं तो कहती हूँ कि पुलिस में दे दो।”

“अरे नहीं! वहाँ पर तो ये बेचारा और पागल हो जाएगा।”

कुछ ही देर में आदमियों का जत्था बच्चे को लेकर लौटा। साथ ही वो दोनों लड़के भी थे जो उसका पता लगाने के लिए गए थे। किसी को भी उसके बारे में कुछ मालूम नहीं था। वो समोसे वाले अंकल भी आए थे कि कहीं उनका ही तो पोता नहीं है। पर ये उनका भी नहीं था। बच्चा सो रहा था। रात हो चुकी थी। बच्चा दादाजी की खाट पर ही सोया हुआ था। बातें धीमी हो चुकी थीं। फैसला हुआ कि बच्चे को ढूँढने वाले जब तक यहाँ नहीं आएँगे, हम इसे कहीं नहीं भेजेंगे।

“पर इसे रखेगा कौन?”

दादाजी ने कहा, “और कौन रखेगा? मैं रखूँगा, मेरे पास ही सो जाएगा।”

सब्ज़ी वाले अंकल बोले, “अरे! पर बच्चे के लिए खाना, कपड़े सब कुछ चाहिए होगा।”

‘कौन रखेगा, कौन रखेगा’ का नारा और परेशानी सभी में देखी जा सकती थी। इतने में अंजलि गली के अन्दर आती हुई दिखाई दी। सभी की आँखों में जैसे खुशी छलक आई थी। जैसे ही अंजलि उनके करीब आई, दादाजी ने कहा, “बेटा, अपने घर में एक बिस्तर और कर दे। ये देख कौन है?”

अंजलि उस बच्चे को देखती रही। छह या सात साल का बच्चा, नंगा, सोया हुआ। वो कुछ नहीं बोली। जो भी करना था वो बाद में होता रहेगा। सबसे पहले वो उसे अपने घर में ले जाने के लिए खड़ी हुई। गली में खड़े लोगों की तो जैसे कोई बहुत ही बड़ी परेशानी खतम हो गई थी। दादाजी जाते हुए बोले, “जब तक इसके घरवाले इसे खोजते हुए नहीं आ जाते तब तक इसे रख ले।”

आज दो साल हो चुके हैं मगर उसे लेने कोई नहीं आया। कई शादियाँ हुईं, हादसे हुए लेकिन अंजलि के घर का शोर बढ़ता ही गया है, कम नहीं हुआ।

कैसे बना वर्णाक्षर

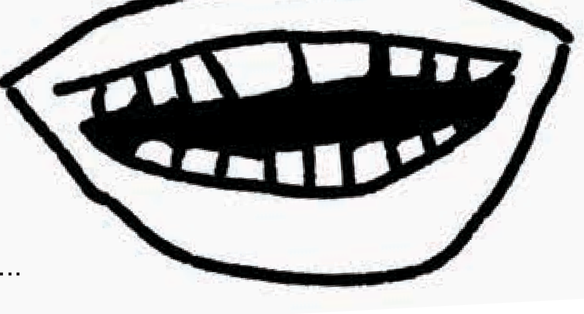

रडयार्ड किपलिंग

क्या तुमने कभी सोचा है कि अक्षर कैसे बने होंगे? किसने ये काम किया होगा? रडयार्ड किपलिंग की कल्पना में कुछ ऐसे बने थे अक्षर...

टैफिमाइ मेटालुमाइ (जिसे हम टैफी बुलाएँगे) अपने पापा के साथ फिर से कार्प मछली के शिकार पर निकल गई। उसकी माँ चाहती थीं कि वह घर पर रहकर उनकी गुफा के बाहर लगे लम्बे खम्भों पर खाल सुखाने में मदद करे। लेकिन टैफी सुबह-सुबह ही पापा के पास गई और फिर दोनों मछलियाँ पकड़ने लगे।

थोड़ी ही देर बाद वह हँसने लगी और उसके पापा ने कहा, “भोंदू मत बनो, बेटा।” “लेकिन सब कितना भड़क गए थे ना!” टैफी बोली। “तुम्हें याद नहीं कैसे बड़े सरकार ने अपने गाल फूला लिए थे, और बालों में लगी मिट्टी के साथ वो प्यारा, अजनबी आदमी कितना मज़ेदार लग रहा था ना?”

“बिलकुल,” टेगुमाई ने कहा। “और मुझे उस अजनबी आदमी को दो हिरणों की खाल देनी पड़ीं, वो भी रेशमी किनारों वाली, उन सब चीज़ों के लिए जो हमने उसके साथ कीं।”

“हमने कुछ नहीं किया,” टैफी बोली। “वो तो मम्मी, दूसरी महिलाओं और मिट्टी का काम था।”

“अच्छा, हम उसकी बात नहीं करेंगे।” पापा बोले।

टैफी ने एक लम्बी हड्डी ली और पूरे दस मिनिट के लिए एकदम चुप बैठी रही। तब तक उसके पापा भोजपत्र (बर्च पेड़ की छाल) के टुकड़ों पर शार्क मछली के दाँत से कुछ कुरेदते रहे। फिर टैफी ने कहा, “पापा, मैंने एक सीक्रेट, एक सप्राइज़ के बारे में सोचा है। तुम कुछ आवाज़ निकालो - कोई भी आवाज़।”

“आह!” टेगुमाई बोला। “क्या यह ठीक है?”

“हाँ,” टैफी बोली। “तुम तो एकदम एक कार्प मछली जैसे दिख रहे हो, जिसका मुँह खुला है। फिर से बोलो ना प्लीज़!”

“आह! आह! आह!” उसके पापा बोले। “बदतमीज़ी मत करो, बेटा।”

“मैं बदतमीज़ी नहीं कर रही हूँ, पापा। सच्ची।” टैफी बोली। “अपना मुँह ऐसे ही खुला रखना और वो दाँत ज़रा पकड़ाना। मैं कार्प मछली का पूरा खुला मुँह उकेरने वाली हूँ।”

“क्यों?” उसके पापा बोले।

“क्या पापा, तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा क्या?” टैफी ने छाल खरोंचते हुए कहा। “ये हमारा सीक्रेट सप्राइज़ होगा। जब मैं धुएँ में मुँह खोली हुई एक कार्प मछली का चित्र हमारी गुफा के पीछे वाली दीवार पर बनाऊँगी - यदि मम्मी को कोई दिक्कत ना हो - तो तुम्हें उस ‘आह’ आवाज़ की याद आएगी। फिर हम वैसा ही खेल खेल सकते हैं जैसा हमने पिछली ठण्ड में खेला था। याद है जब मैंने बीवर स्वाम्प में अँधेरे से बाहर कूदकर तुम्हें इसी आवाज़ से डराया था।”

“अच्छा?” उसके पापा बड़ों की उस आवाज़ में बोले, जिसका इस्तेमाल वो तब करते हैं जब वे वाकई सुन रहे होते हैं। “आगे बोलो, टैफी।”

“अरे यार!” टैफी बोली। “मैं पूरी कार्प मछली तो बना नहीं सकती, लेकिन कुछ तो बना सकती हूँ जिससे कार्प मछली का मुँह समझ में आए। पता है ना कैसे वो अपने सिर को कीचड़ में गाढे खड़ी होती हैं? देखो, ये है एक नकली कार्प मछली (हम झूठमूठ का मान लेते हैं कि पूरी कार्प मछली का चित्र बना है)। ये है सिर्फ उसका मुँह और इसका मतलब है ‘आह’।” और फिर उसने यह चित्र बनाया (1)।

1.

“बुरा नहीं है,” टेगुमाई ने कहा, और छाल के अपने टुकड़े पर उसने कुछ खरोंचा, “लेकिन तुम उसके मुँह पर लटकने वाली मूँछें बनाना भूल गई हो।”

“लेकिन पापा, वो मुझसे नहीं बन रही हैं।”

“तुम्हें और कुछ बनाने की ज़रूरत नहीं है, टैफी। सिर्फ खुला हुआ मुँह और उसके ऊपर मूँछें। फिर हमें पता चल जाएगा कि यह कार्प मछली है, क्योंकि ट्राउट और पर्च मछलियों की मूँछें नहीं होतीं। ये देखो,” और उसने यह चित्र बनाया (2)।

2.

3.

“अब मैं भी ऐसे ही बनाती हूँ।” टैफी बोली। “जब तुम इसे देखोगे तो क्या तुम्हें समझ में आएगा?” और फिर उसने यह चित्र बनाया (3)।

“बिलकुल।” पापा बोले। “और जब भी मैं इसे कहीं और देखूँगा मुझे उतना ही आश्चर्य होगा। हर बार मुझे लगेगा जैसे तुमने किसी पेड़ के पीछे से कूदकर ‘आह’ बोला हो।”

“अब कुछ और आवाज़ निकालो,” गर्व से फूलती टैफी बोली।

“याह!” पापा बोले, बहुत ज़ोर-से।

“हम्म,” टैफी बोली। “ये तो मिली-जुली आवाज़ है। इसका आखिरी भाग तो ‘आह’ है यानी कि कार्प मछली का मुँह, लेकिन पहले वाले हिस्से का हम क्या कर सकते हैं? यर-यर-यर और आह! या!”

“यह कार्प मछली की मुँह वाली आवाज़ से काफी मिलता-जुलता है। ऐसा करते हैं कि कार्प मछली का कोई और हिस्सा बनाते हैं और दोनों को जोड़ देते हैं,” पापा बोले। उनमें भी काफी उत्साह था।

“नहीं। अगर जुड़े रहेंगे तो मैं भूल जाऊँगी। इसे अलग से बनाते हैं। ऐसा करते हैं कि उसकी पूँछ बनाते हैं। अगर वह अपने सिर पर खड़ी हो तो पूँछ पहले आएगी। वैसे उसकी पूँछ मैं बहुत आसानी से बना सकती हूँ,” टैफी बोली।

“अच्छा विचार है,” टेगुमाई ने कहा। “इस ‘यर’ आवाज़ के लिए ये लो कार्प मछली की पूँछ।” और उन्होंने यह चित्र बनाया (4)।

4.

“अब मैं कोशिश करती हूँ।” टैफी बोली। “तुम्हें पता है ना पापा कि मैं तुम्हारे जैसा चित्र नहीं बना सकती। यदि मैं केवल पूँछ का दरार वाला हिस्सा और जहाँ वो जुड़ती है, उसकी नीचे की तरफ जाने वाली लाइन बनाऊँ तो चलेगा?” और उसने यह चित्र बनाया (5)।

पापा ने सिर हिलाया। उनकी आँखें उत्साह से चमक रहीं थी।

“ये बहुत ही सुन्दर है,” टैफी बोली । “अब एक और आवाज़ निकालो, पापा।”

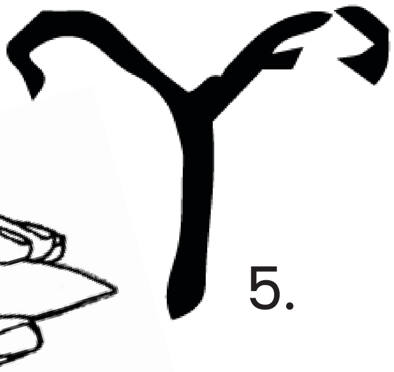

5.

“ओह!” उसके पापा ने कहा, बहुत ज़ोर-से।

“ये तो बड़ा आसान है,” टैफी बोली। “तुम अपने मुँह को बिलकुल गोल बनाना जैसे अण्डा या पत्थर। तो इसके लिए एक अण्डा या पत्थर चल जाएगा।”

“तुम हमेशा अण्डे या पत्थर ढूँढ नहीं पाओगी। हमें कुछ गोल बनाना होगा।” और उन्होंने यह बनाया (6)।

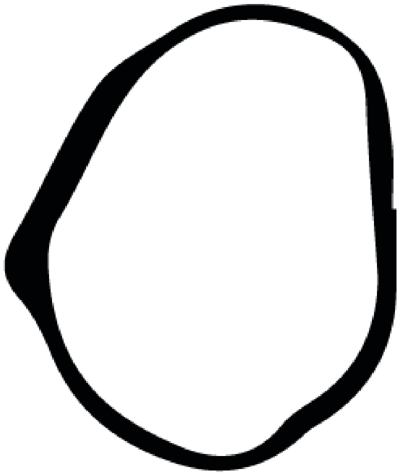

6.

“बाप रे बाप!” टैफी बोली। हमने कितने सारे आवाज़-चित्र बनाए हैं - कार्प-मुँह, कार्प-पूँछ और अण्डा!” “अब कोई और आवाज़ सुनाओ, पापा।” “श्श!” टैफी को चुप कराते हुए वे बोले। लेकिन टैफी ने खुश होकर इस आवाज़ के लिए यह चित्र बनाया (7)।

7.

और इस तरह वागाई नदी के किनारे टैफी और टैगुमाई ने ‘A’ से लेकर ‘Z’ तक के पूरे अक्षर बनाए। उस दिन को हज़ारों साल बीत गए हैं और समय के साथ अक्षरों में बदलाव भी आए हैं। वैसे, अगर तुम्हें अपनी किसी सीक्रेट भाषा के लिए अक्षर बनाने होते तो तुम कैसे बनाते?

यह कहानी रडयार्ड किपलिंग की लघुकथाओं के संग्रह *जस्ट सो स्टोरीज़* की कहानी 'हाउ द एल्फाबेट वाज़ मेड' का अंश है। यह संग्रह पहली बार 1902 में छपा था।

अंग्रेज़ी से अनुवाद - विनता विश्वनाथन

डिज़ाइन - इशिता देबनाथ बिस्वास

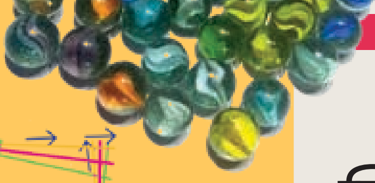

गणित है मज़ेदार

चित्र में पैटर्न या पैटर्न में चित्र

आलोका कन्हरे

हम सब किसी न किसी चीज़ से डरते हैं - मम्मी-पापा, भूत, मकड़ी, गरजते बादल...। और गणित से तो लगभग सबको डर लगता है। इन पन्नों में हम ऐसी चीज़ें देने की कोशिश कर रहे हैं जिनको हल करने में मज़ा आए। ये पन्ने खास तौर उन लोगों के लिए हैं जिन्हें गणित से डर लगता है।

अपने आसपास देखो तो कितनी ही चीज़ों के पैटर्न नज़र आते हैं - रंगों के पैटर्न, खिड़कियों की जाली के पैटर्न, टाइल्स के पैटर्न। गणित में भी कई तरह के मज़ेदार पैटर्न होते हैं।

नीचे दिए गए चित्रों को देखो। क्या तुम्हें इनमें कोई पैटर्न दिखाई दे रहा है?

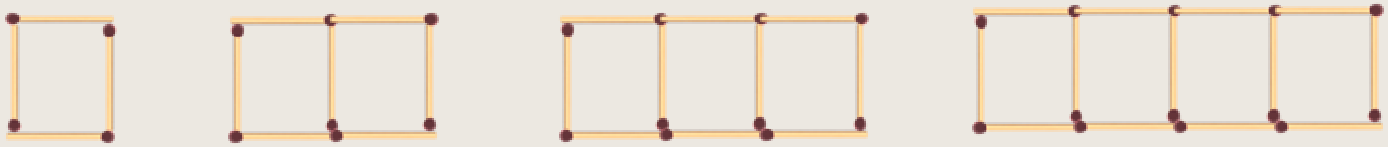

(1) (2) (3) (4)

क्रम से दिए गए इन चित्रों में माचिस की तीलियों को गिनो। तुमने 4, 7, 10 और 13 तीलियाँ गिनी होंगी। अब बताओ कि

1- पाँचवें चित्र में कितनी तीलियाँ होंगी?
2- पच्चीसवें चित्र में कितनी तीलियाँ होंगी?
3- क्या पच्चीसवें चित्र की तीलियाँ पता करने के लिए तुम्हें चित्र बनाना पड़ा?
4- तो क्या तुम बिना चित्र बनाए तीसवें और सौवें चित्रों की तीलियों की संख्या पता कर सकते हो?

जवाब

तुमने शायद गौर किया हो कि हर चित्र में पहले चित्र से 3 तीलियाँ ज़्यादा हैं। इस हिसाब से चौथे चित्र में यदि 13 तीलियाँ हैं तो पाँचवें में 13 + 3 = 16 तीलियाँ होंगी। इसका जवाब हम चित्र बनाकर भी निकाल सकते हैं।

लेकिन पच्चीसवें चित्र को बनाना थोड़ा मुश्किल होगा। इसका हल तो अंकों का पैर्टन समझकर ही निकल पाएगा।

पहले चित्र में 4 तीलियाँ हैं। इसे हम ऐसे भी लिख सकते हैं - 1 + 3 = 4। दूसरे चित्र में 7 तीलियाँ हैं यानी कि पिछले चित्र से 3 ज़्यादा। इसे हम 1 + 3 + 3 = 7 भी लिख सकते हैं। इस तरह इस क्रम के हर अंक को हम इस तरह लिख सकते हैं -

चित्र क्रमांक	1	2	3	4	5	... 25
तीलियाँ	1+3	1+3+3	1+3+3+3	1+3+3+3+3	1+3+3+3+3+3	?
	1+(3x1)	1+(3x2)	1+(3x3)	1+(3x4)	1+(3x5)	?
	1+3	1+6	1+9	1+12	1+15	?
	4	7	10	13	16	?

पहले चित्र में हमने 1 में एक बार 3 जोड़ा। दूसरे में 1 से दो बार 3 जोड़ा यानी कि 1 से (3x2) जोड़ा। तीसरे में हमने 3 को तीन बार जोड़ा यानी कि (3x3)। इस तरह पच्चीसवें चित्र में 3 को 25 बार जोड़ना होगा। यानी कि जवाब होगा 1 + (3x25) = 1 + 75 = 76 तीलियाँ।

अब तुम बताओ कि तीसवें और सौवें चित्र में कितनी तीलियाँ होंगी ?

चलो, अब एक दूसरे पैटर्न पर आते हैं।

यहाँ कंचों के कुछ ढेर दिए गए हैं। हरेक ढेर में कितने कंचे हैं, गिनकर देखो। फिर इन सवालों का जवाब देना -

1- सातवें चित्र में कितने कंचे होंगे?

2- सैंतीसवें चित्र में कितने कंचे होंगे?

3- बिना चित्र बनाए क्या तुम चालीसवें चित्र के कंचों की संख्या पता कर सकते हो?

4- पचासवें चित्र में कंचों की संख्या कितनी होंगी?

जवाब

हर चित्र में पहले चित्र से 2 कंचे ज़्यादा हैं। पहले में 5, दूसरे में 7, तीसरे में 9 और चौथे में 11 कंचे हैं। तो पाँचवें में 11 +2 = 13 कंचे होंगे, छटवें में 13 +2 = 15 कंचे होंगे और सातवें में 15 + 2 = 17 कंचे होंगे।

सैंतीसवें चित्र में कंचों की संख्या छत्तीसवें चित्र में कंचों की और 2 का जोड़ होगा। लेकिन छत्तीसवें अंक के लिए पैंतीसवें अंक का पता होना ज़रूरी है। इसी तरह पैंतीसवें के लिए चौंतीसवां अंक पता करना होगा इत्यादि। क्यों ना, इसके लिए हम वैसी ही एक तालिका बनाकर देखें, जैसी हमने पहले पैटर्न के जवाब में बनाई थी।

पहले ढेर में 5 कंचे हैं। इसे हम 3+2 भी लिख सकते हैं। तो तालिका कुछ ऐसी बनेगी -

चित्र क्रमांक	1	2	3	4	5	...37
कंचे	3+2	3+2+2	3+2+2+2	3+2+2+2+2	3+2+2+2+2+2	?
	3+(2x1)	3+(2x2)	3+(2x3)	3+(2x4)	3+(2x5)	?
	3+2	3+4	3+6	3+8	3+10	?
	5	7	9	11	13	?

इस हिसाब से तो सैंतीसवें चित्र में 3 + 2 + ... +2 (37 बार) कंचे होंगे। यानी कि 3 + (37x 2) = 3+ 74 = 77 कंचे होंगे
अब तुम बताओ कि चालीसवें व पचासवें चित्र में कितने कंचे होंगे ?

इस आखिरी पैटर्न का पता लगाओ। नीचे दिए गए सवालों के जवाब हमें भेजो और एकलव्य की किताबें जीतने का मौका पाओ।

1. डिज़ाइन 7 में कितनी तीलियाँ होंगी?
2. डिज़ाइन 28 में कितनी तीलियाँ होंगी?
3. क्या तुम बिना चित्र बनाए डिज़ाइन 40 में लगने वाली तीलियों की संख्या पता कर सकते हो?
4. डिज़ाइन 100 में कितनी तीलियाँ होंगी?

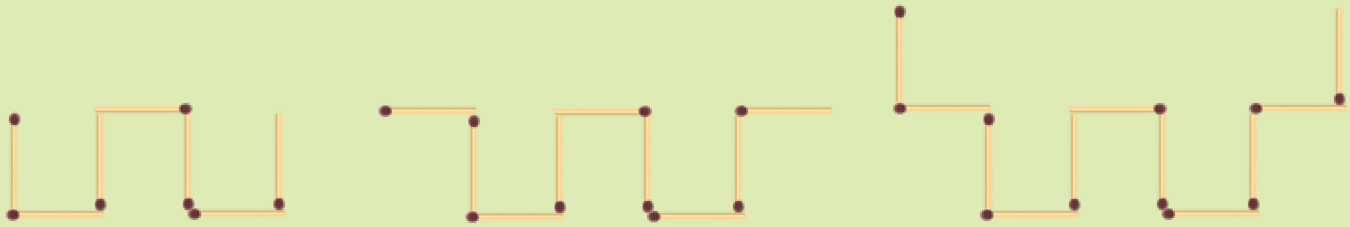

सूर्य, तुम तपो

रुस्तम

चित्र: मेधांश शेखर

सूर्य, तुम तपो
पर इतना नहीं
कि पृथ्वी जल जाए।
मेघो, तुम बरसो
पर इतना नहीं
कि नदियाँ उफन पड़ें,
सब कुछ फिसल जाए।
हवा, तुम बहो
पर ऐसे नहीं
कि घूमने लगे समुद्र,
सृष्टि हिल जाए।
मनुष्य, तुम चाहते हो
तो रहो
पर यूँ कि
साँस बनी रहे,
पानी बचा रहे।

मेधांश शेखर, पाँच वर्ष, मोटिवेशन - द लर्निंग सेंटर, नोएडा, उत्तर प्रदेश

फिर से लापता

हर्षिका उदासी
अंग्रेज़ी से अनुवाद: भरत त्रिपाठी
चित्र: लावण्या नायडू

यह हर्षिका उदासी की अंग्रेज़ी किताब *Kittu's Very Mad Day* का हिन्दी अनुवाद है।

अब तक तुमने पढ़ा :
किट्टू अपने चौदह लोगों के परिवार के साथ सैर के लिए पन्ना जाता है। लौटते समय एक ढाबे पर वह छूट जाता है। माधव नाम का आइसक्रीम वाला उसे आइसक्रीम के लिए पूछता है। बातूनी किट्टू आइसक्रीम खा लेता है और पैसे भी नहीं देता। लेकिन जब किट्टू उसे बताता है कि उसका एक पैर नहीं है और वह खो गया है तो माधव उसे अपने साथ ले जाता है। अपने अजीबोगरीब परिवार से अलग होकर किट्टू को मज़ा आ रहा होता है। पर जब माधव उसे पुलिस स्टेशन ले जाने लगता है तो वह माधव को अपने पिता के डॉन होने की झूठी कहानी बताता है। इससे डरकर माधव उसे अपने घर ले आता है। माधव की बेटी मधेश्वरी यानी 'मैड' को किट्टू का आना बिलकुल अच्छा नहीं लगता। जब किट्टू खाना खाकर मज़े से सो जाता है तभी मैड उससे बदला लेने के लिए उसकी बैसाखियाँ लेकर चली जाती है।
अब आगे...

जब खजुराहो में सारे लोग मिनी बस से उतरे तब जाकर इती फुई को लगा कि कुछ तो है जो छूट गया है। उन्होंने अपने चहेते को ढूँढने के लिए एक-एक चेहरे पर नज़रें दौड़ाईं, फिर पलक झपककर एक बार फिर से सारे चेहरों को ध्यान से देखा।

"हाय माँ! किट्टूटूटू?" वो रोते हुए चिल्लाईं।

माँ तेज़ी-से वापस बस में चढ़ीं, ये देखने के लिए कि किट्टू कहीं बस के अन्दर सो तो नहीं रहा। जब वो वापिस बाहर आईं तो उनका चेहरा फक पड़ चुका था। उन्होंने मन्नी को घूरकर देखा। "किट्टू कहाँ है?"

"मु...मु...मुझे नहीं पता बहन। मैं तो इन बच्चों को सम्हाल रही थी क्योंकि ये हमेशा कोई न कोई शैतानी करते रहते हैं," काँपती हुई आवाज़ में मन्नी बोलीं।

चिन्मी जो अपनी माँ की गोद में सो गई थी, इस शोरगुल से जाग गई। इस बात का पता चलने पर कि उसका प्रिय टिट्टू मिल नहीं रहा है, वो ज़ोर-से रोते हुए बोली, "टिट्टू भाई..."

मोनी काकी और फोरम काकी ने बच्चों की तरफ घूरकर देखा कि कहीं उन्होंने तो कोई शरारत नहीं की। लेकिन उससे भी कोई नतीजा नहीं निकला।

'वैं...वैं!!!' हमेशा की तरह चिक्की रोई।

'हलवा!' हमेशा की तरह पोटू बोला।

"डफोड़ कहीं का! पक्के में हमारे साथ कोई शरारत कर रहा होगा," पिब्बू ने कहा।

पुन्नी ही अकेली ऐसी थी जिसने कुछ नहीं कहा। उसे लग रहा था कि मामला गड़बड़ है।

'ढाबा!' पप्पा बोले, जब उन्हें ये याद आया कि उन्होंने अपने बेटे को आखिरी बार वहीं देखा था।

इसके बाद उन सब लोगों के बीच ताज्जुब, डर, बेचैनी और आरोपों से भरी बकबक शुरू हो गई। इसके 'सिर्फ एक घण्टे' बाद – जी हाँ, दुनिया के सबसे अजीबोगरीब परिवार के हिसाब से एक घण्टा वाकई बहुत कम समय था – वो लोग एक दूसरी मिनी बस में दोबारा रैन बसेरा ढाबे के लिए निकल पड़े। दूसरी मिनी बस इसलिए क्योंकि पिछली मिनी बस के ड्राइवर ने उन्हें दोबारा ले जाने से साफ मना कर दिया था!

माधव अपने गाँव से किट्टू के पिता को सम्पर्क नहीं कर पाया था क्योंकि पोस्ट ऑफिस में जो एकमात्र फोन था, वो खराब था। उसने फिर एक बार हाइवे की राह पकड़ ली थी, इस उम्मीद में कि उसका ट्रक ड्राइवर दोस्त, दलजीत, उसे रास्ते में मिल जाएगा। किस्मत से दलजीत उसे जल्दी ही मिल गया, उसके पसन्दीदा ढाबे पर, और उसने खुशी-खुशी माधव को अपना फोन इस्तेमाल करने के लिए दे दिया।

जब माधव ने उसके फोन से किट्टू का दिया नम्बर लगाया तो फोन किसी महिला ने उठाया।

उसकी आवाज़ सुनते ही माधव अनजाने ही सावधान की मुद्रा में आ गया। मुम्बई के डॉन की पत्नी निश्चित ही खुद भी बड़ी विकट महिला होगी। "भाभी, आपका बेटा मेरे पास है। मैं माधव हूँ। भगवान की कृपा से मेरा कुल्फी का धन्धा है। आप आकर किट्टू को ले जाइए," मैडम डॉन को खुश करने के लिए माधव ने बहुत ही मीठे और विनम्र अन्दाज़ में कहा।

लाइन की दूसरी तरफ महिला की आवाज़ अब गुस्से से भर गई थी। उसने जवाब दिया, "किसका बेटा? रॉंग नम्बर!" और फोन काट दिया।

माधव के मन में एक डरावना खयाल आया। क्या वो शक्तिशाली डॉन और उसकी पत्नी किट्टू को अपने साथ नहीं रखना...? फिर भी उसने विनती करने के लिए दोबारा फोन लगाया, और इस बार बिना किसी भूमिका के शुरू हो गया, "नहीं, भाभी। मैं जानता हूँ कि वो अपंग है। लेकिन ऐसा मत कहिए..."

"क्या बकवास लगा रखी है! अगर इसके बाद फोन किया ना तो मैं ये नम्बर पुलिस को दे दूँगी।"

दलजीत पुलिस के साथ कोई भी पंगा नहीं लेना चाहता था इसलिए उसने झट-से अपना फोन वापस ले लिया और माधव को अलविदा कह दिया।

मम्मी-पापा से सम्पर्क करने के मिशन में नाकामयाब होने के बाद, माधव अपनी साइकिल से वापस घर आ गया। घर आते ही उसने पाया कि किट्टू एक बार फिर गुम हो गया था और मंगलेश्वरी ज़ोर-ज़ोर से उसके गायब होने का दुखड़ा रो रही थी। माधव एक बात तो अच्छे से जानता था कि वो लोग इस बात के लिए कतई मुसीबत में नहीं पड़ना चाहते थे कि उन्होंने उस लड़के को फिर खो दिया है जो उन्हें मिला था। पता नहीं इस बात का कुछ मतलब बनता भी था या नहीं।

इसलिए माधव और मंगलेश्वरी किट्टू को ढूँढने के लिए निकल पड़े। पर एक घण्टा धूप में घूमते रहने के बाद वो लोग थक-हारकर घर लौट आए।

जब मैड घर वापस लौटी तो उसने घर में उदासी का माहौल देखा। "क्या हुआ?" उसने अपनी माँ से पूछा।

"अरे वो लड़का! कहीं मिल नहीं रहा है। क्या तूने उसे देखा है? तूने उससे लड़ाई तो नहीं की थी? उसे यहाँ से चले जाने को तो नहीं कह दिया था?" मंगलेश्वरी ने सवालों की गोलाबारी कर दी।

माधव ने सोचा कि उसकी पत्नी का नाम मंगलेश्वरी की बजाय डाकू मंगल सिंह होना चाहिए था। इस विस्फोटक महिला पर मंगलेश्वरी जैसा कोमल नाम जँचता ही नहीं था।

"नहीं तो!" मैड बोली। लेकिन उसे पता था कि हो न हो ये परिस्थिति उसी की वजह से बनी थी। अब उसे थोड़ा डर भी लग रहा था। वो लड़का इतना बुरा भी नहीं था, है ना? उसने तो बस मेरे – एक मिनट, वो दौड़कर भीतर देखने गई, और वाकई बोर्ड वहाँ नहीं था! तो वो नन्हा दुष्ट स्केटबोर्ड के साथ चम्पत हो गया था।

मैड गुस्से और झुँझलाहट से लाल पड़ गई और वो चिल्लाने ही वाली थी कि उसने एक आवाज़ सुनी – वुह्म...वुह्म। आवाज़ सुनकर वो दबे पाँव घर के पीछे वाले आँगन की तरफ चल दी।

और वहीं था अपना हीरो।

किट्टू को इस बात की रत्ती भर भी परवाह नहीं थी कि मैड के माता-पिता इस बात को सोच-सोचकर बेहाल हो गए थे कि पता नहीं वो कहाँ चला गया होगा। लेकिन आश्चर्य की बात है कि इस बार मैड किट्टू पर नाराज़ नहीं हुई।

"तुम्हें लगा मैं चला जाऊँगा?" किट्टू ने खीसें निपोरते हुए कहा।

मैड भरोसा नहीं कर पा रही थी कि किट्टू को देखकर उसे खुशी हो रही थी। इस बात के बावजूद कि किट्टू के हाथ में वो चीज़ थी जो मैड को दुनिया में सबसे ज़्यादा प्रिय थी – उसका स्केटबोर्ड।

मंगलेश्वरी और माधव ने भी घर के पिछवाड़े से आ रही आवाज़ें सुन ली थीं और वो दोनों दौड़ते हुए वहाँ पहुँचे ये देखने के लिए कि वहाँ चल क्या रहा है।

"तो तुम यहाँ हो!" माधव चिल्लाया। वो किट्टू को खूब डाँट लगाता लेकिन डॉन जूनियर ने गर्दन तिरछी करके और भौंहें चढ़ाकर ऐसा चेहरा बनाया कि वो डर के मारे वहीं रुक गया। फिल्में देख-देखकर किट्टू ऐसा चेहरा बनाने में उस्ताद हो गया था। और सबसे बड़ी कृपा ये रही कि मंगलेश्वरी पर भी इसका असर हो गया।

वो दोनों वापस घर के भीतर चले गए। मंगलेश्वरी ने माधव के सामने सवालों के गोले बरसाना शुरू कर दिए, "जब तुमने पहली बार इस लड़के को देखा था तो तुम दूसरी राह नहीं पकड़ सकते थे? इसे घर लाने को किसने कहा था? मैं एक और बच्चे का खयाल क्यों रखूँ? तुम्हें अन्दाज़ा है एक माँ होने का मतलब क्या होता है?"

उधर पीछे आँगन में ध्यान वापस स्केटबोर्ड पर आ टिका था। वो नया तो कतई नहीं था, पर उसके पहिए बिलकुल बढ़िया सरसराते थे। किट्टू ने उसे बड़े अधिकार से पकड़ रखा था। पहले वो उसके पहियों से खेलता रहा, फिर उसे डफली की तरह बजाने लगा।

यह देखकर आखिरकार मैड बोली, "हो गया? अब वापस दो!"

"ठीक है। पर इस स्केटबोर्ड के साथ तुम करती क्या हो? क्या तुमने इसे कहीं से चुराया है या कोई टूरिस्ट तुम्हें दे गया है?" किट्टू ने मज़ाक उड़ाते हुए कहा।

"दोनों ही नहीं, खड़ूस," मैड बोली। "तुम जानना चाहते हो न कि मैं इसके साथ क्या कर सकती हूँ? चलो दिखाती हूँ!"

मैड स्केटबोर्ड लेकर दौड़कर आगे के आँगन में आ गई। किट्टू भी जल्दी से उसके पीछे-पीछे वहाँ आ गया। वो उतनी ही तेज़ी-से आया जितनी तेज़ उसकी बहन पुन्नी चलती है, जो उससे एक साल छोटी है।

मैड अपने घर से निकलकर सड़क पर आ गई जिसके किनारे पेड़ों की कतार थी। वो इस सड़क पर दो बार मुड़ी, तीन मकानों को पार किया और तेज़ी-से एक बड़ी खुली जगह में आ गई। वहाँ पहुँचकर उसने किट्टू की तरफ मुड़कर देखा। किट्टू को तो आसपास की चीज़ों को देखने का समय ही नहीं मिला। मैड ने स्केटबोर्ड को नीचे रखा और उस पर चढ़ गई। और इससे पहले कि किट्टू पलक झपकता, मैड बलखाती, लहराती हुई उसके सामने से सरसराती निकल गई!

उस समय तो किट्टू उन कार्टून किरदारों जैसा लग रहा था जिनके चेहरों पर नाटकीय भाव होते हैं। उसका मुँह खुला का खुला रह गया था और ऐसा लग रहा था कि उसका निचला जबड़ा ज़मीन छू लेगा!

जारी...

क्यों-क्यों?

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था - "अगर तुम लड़की हो और तुम्हें एक दिन के लिए लड़का बनने का मौका मिले या तुम एक लड़के हो और तुम्हे एक दिन के लिए लड़की बनने को मिले तो, तुम उस दिन क्या करना चाहोगे, और क्यों?" पहली से लेकर ग्यारहवीं के बच्चों ने हमें अपने जवाब लिख भेजे। उनमें से कुछ हम यहाँ छाप रहे हैं। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें लिख भेजना...

एक दिन में तो सारी इच्छाएँ पूरी नहीं हो पाएँगी। मैं खूब घूमूँगी, नौकरी करूँगी ताकि पता चले कि नौकरी में कैसा लगता होगा? क्रिकेट मैच खेलूँगी।

वन्दना, दसवीं, राजकीय इंटर कॉलेज, केवर्स, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

मैं अगर लड़की होता तो लड़की होने का फायदा उठाता। और फ्री में कुछ खरीदता, खाता और नाम बाद में उस लड़की का आता। और यदि मेरी किसी से दुश्मनी होती तो मैं उसे फँसाकर डाँट खिलाता। और कुछ भी चीज़ें उधार में ले लेता और अगले दिन उस लड़की को डाँट पड़ती। और किसी को परेशान करता।

सौरभ ध्रुव, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, शंकरदाह, धमतरी, छत्तीसगढ़

अगर मैं लड़की होता तो मैं घर के काम में माँ की मदद करूँगा, जैसे कि मैं घर की साफ-सफाई करूँगा। एक अच्छी-सी, सुन्दर-सी फ्रॉक पहनूँगा। बाल बढ़ाऊँगा, कान में झुमका डालूँगा। फिर बालों की दो चोटियाँ बनाऊँगा। फिर कमर हिलाते-हिलाते अपनी सहेलियों के साथ सब्ज़ी बनाऊँगा और फिर कहूँगा, 'देखा ना! कितनी अच्छी सब्ज़ी बनी है'। फिर मैं दुकान से लिपस्टिक, नेल पेंट वगैरह लूँगा। आइने के सामने जाकर लिपस्टिक, नेलपेंट लगाकर, साड़ी पहनकर नागपंचमी में फुगड़ी खेलूँगा और सबसे कहूँगा देखा मैं कितनी अच्छी लग रही हूँ।

आर्यन शिवाजी निम्बालकर, छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

अगर मैं एक लड़का होता,
बॉडी-सॉडी खूब बनाता।
लड़कों जैसी बातें करता,
हीरोपंती खूब दिखाता।

नम्या सिंह, चौथी, दिल्ली पब्लिक स्कूल, पटना, बिहार

यदि मैं एक दिन के लिए लड़का बनी तो मैं बाइक चलाऊँगी और अपने द्वीप के चारों ओर घूमूँगी। लड़की होने के नाते मुझे कभी भी पेड़ काटना, खेती करना जैसे काम नहीं करने होते हैं। लेकिन अगर मैं लड़का बनी तो मैं यह सब करने की कोशिश करूँगी। लड़की होने की वजह से मुझे ज़्यादातर घर पर ही रहना पड़ता है। अगर मैं लड़का बनी तो हमेशा घर से बाहर रहूँगी।

नयनमोनी पेयांग, पाँचवीं, गोबिनपुर एल पी स्कूल, मजूली, आसाम

एक दिन के लिए लड़का बनूँगी तो खूब फैशन करूँगी। यहाँ-वहाँ घूमूँगी। घर आने की जल्दी नहीं रहेगी तो उन सभी से मिलूँगी जिनसे कई दिनों तक बात नहीं होती।

मीनाक्षी, कफोल गाँव, केवर्स, पौड़ी, उत्तराखण्ड

मेरे स्कूल में सिर्फ लड़कों को ही फुटबॉल खेलने दिया जाता है। मेरा भी फुटबॉल खेलने का बहुत मन करता था पर मैं नहीं खेल पाती थी। मगर अब लड़का होने के नाते मैं अपने स्कूल में खुशी-खुशी फुटबॉल खेल सकती हूँ।

आस्वी शर्मा, पाँचवीं, दिल्ली पब्लिक स्कूल, पटना, बिहार

चित्र: नूतन सूर्यवंशी, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

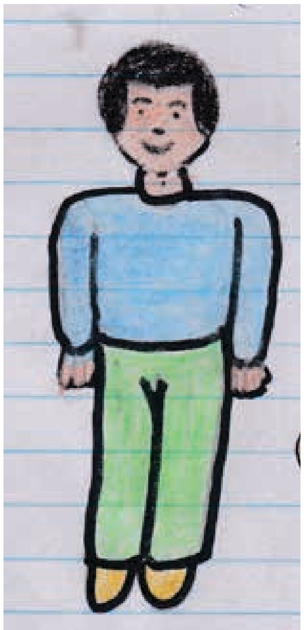

चित्र: तनिष्का इंदलकर, छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मेरे माता-पिता को एक लड़का चाहिए था लेकिन मैं लड़की पैदा हो गई। सब लोग कहते हैं कि अगर उन्हें एक लड़का होता तो उनके बुढ़ापे का सहारा होता। लेकिन वो कभी ऐसा जताते नहीं कि उनको एक लड़की है तो उनके बुढ़ापे का सहारा कौन बनेगा। मुझे लगता है कि उन्होंने मुझे स्वीकारा है। एक दिन में मैं तो उनके सारे सपने पूरे नहीं कर सकती। लेकिन कोई बात नहीं मैं उनके लिए पूरी ज़िन्दगी लड़का बन सकती हूँ। मैं लड़का बनकर वो सारे काम कर लूँगी और उनके सारे सपने पूरे करूँगी। इसलिए अगर मुझे मौका मिले तो मैं ज़रूर लड़का बनूँगा।

आकांक्षा कर्वे, आठवीं, आनन्द निकेतन विद्यालय, सेवाग्राम, वर्धा, महाराष्ट्र

••••••••••

मुझे नहीं लगता कि अभी के दौर में ऐसा कोई भी काम जो एक लड़का कर सकता है वो लड़की नहीं कर रही। पर फिर भी अगर मुझे एक दिन के लिए लड़का बनना पड़े तो मैं अपने सभी दोस्तों के साथ देर रात को लॉन्ग ड्राइव पर जाना चाहूँगी। और देखना चाहूँगी कि जब मेरे चेहरे पर भी भैया की तरह दाढ़ी-मूँछ आ जाएगी तो क्या मैं उन्हीं की तरह फनी दिखूँगी। सबसे ज़्यादा मज़ा तो मुझे तब आएगा जब लड़कों के अन्दाज़ में बातें करूँगी। बोले तो एकदम बिन्दास स्टाइल में। वो एक दिन सारी झिझक तोड़ देगा जो एक लड़की में होती है।

श्रेया कुमारी, बाल भवन किलकारी, पटना, बिहार

•••••••••

अगर एक दिन के लिए मैं लड़की बन जाऊँगा तो हर पल यानी चौबीसों घण्टे माँ के साथ बिताऊँगा। मैं देखना चाहूँगा कि एक औरत की एक दिन की ज़िन्दगी में क्या ऐसा है जो हम लड़के समझ नहीं पाते।

सौरभ, राइका केवर्स, गाँव केवर्स, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

•••••••••

अगर मैं एक दिन के लिए लड़की होता तो बहुत कुछ अच्छा होता। मुझे बहुत मज़ा आता। मेरे लम्बे-लम्बे बाल होते। मैं फ्रॉक पहनता। अपने पड़ोस में किसी की शादी होती तो मेंहदी लगाने का मौका मिलता। फिर नेलपॉलिश लगाता।

खिवेंद्र, चौथी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

•••••••••

मैं एक लड़का हूँ। अगर मुझे एक दिन के लिए लड़की बनने का अवसर मिले तो मैं अपनी सारी ख्वाहिश पूरी करूँगा जो मैं एक तरह से पूरी नहीं कर पाया क्योंकि यह सब एक लड़की की इच्छाएँ थीं। मैं अपनी सारी ख्वाहिश पूरी करना चाहूँगा क्योंकि मैं सिर्फ एक बार एक दिन के लिए लड़की बन रहा हूँ। जिन ख्वाहिशों को मैं शर्म के मारे पूरी नहीं पाया उन्हें पूरी करने की कोशिश करूँगा। जैसें मैं लड़कियों की सारी ड्रेस पहनूँगा। अगर मैं यह लड़का होकर पहनता तो मेरे घर पर सब हँसने लगते कि यह लड़का लड़कियों के कपड़े पहना है, हा, हा, हा...। तो मुझे शर्म आती लेकिन जब मैं लड़की होकर यह काम करूँगा तो मैं मज़ाक का पात्र नहीं बनूँगा।

विवेक देवांगन, आठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

••••••••••

अगर मुझे एक दिन के लिए लड़की बनने का मौका मिले तो मैं कन्यापूजन में जाता क्योंकि उन्हें वहाँ अच्छा-अच्छा खाना मिलता है। उन्हें रुमाल, रिबन और पैसे भी मिलते हैं। फिर मैं उन पैसों से कुछ चीज़ें खरीदता। और मैं रक्षाबन्धन पर अपने भैया को राखी पहनाता और तब मेरे भैया मुझे पैसे देते। तब मेरे लम्बे-लम्बे बाल होते। मैं अलग-अलग तरह से बाल बनाता क्योंकि सभी लड़कियाँ लम्बे-लम्बे बाल रखती हैं। और हमें सब कहते हैं तुम्हारे तो बाल बढ़ गए हैं, इन्हें कटाओ। स्कूल में भी डाँटते हैं। तब मैं खूब नाचता। तब मैं लहँगा भी पहनता क्योंकि सभी लड़कियाँ लहँगा भी पहनती हैं। मैं शादी में लहँगा पहनता। जब लड़कियाँ लहँगा पहनती हैं तो सुन्दर लगती हैं।

अंशुल, पाँचवीं, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, गणेशपुर, उत्तराखण्ड

••••••••••

हमारे समाज में जितना प्रोत्साहन और छूट लड़कों को दी जाती है उतनी लड़कियों को नहीं। यदि मुझे एक दिन के लिए लड़का बना दिया जाए तो मैं वह सब करना चाहूँगी, जो समाज हमें करने नहीं देता, जैसे पेड़ पर चढ़ना, देर तक घूमना, कंचे खेलना, बाइक चलाना, गाय-भैंसों का दूध निकालना, सामूहिक खेल खेलना।

हिमांशी ध्रुव, दसवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, शंकरदाह, धमतरी, छत्तीसगढ़

••••••••••

पेज 32 पर जारी...

मेरे पापा की स्कूटर

सोनाली वाघमारे

चित्र: शिवात्मिका लाला

मेरे पापा को लगा कि सभी लोग गाड़ी ले रहे हैं तो मैं क्यों पीछे रहूँ? तभी पापा ने एक पुरानी स्कूटर ली।

पापा बेहद खुश थे। उनसे रहा न गया। शाम होते ही वे गाड़ी निकालकर चल पड़े। और सारा गाँव घूमकर आने के बाद घर की पास वाली नाली में गिर पड़े।

हमारे घर के पास एक नाली है। वहाँ गाड़ी घुमाने के लिए ज़्यादा जगह नहीं है। पापा से नहीं हुआ और वे गिर पड़े। पहले तो कौन गिर पड़ा, ये हम समझे ही नहीं। आवाज़ सुनकर देखने के लिए हम बाहर दौड़ पड़े।

वो स्कूटर तो पूरी तरह से कीचड़ से भर गई थी और साथ में हमारे पापा भी। “छिः, नहीं हैं ये हमारे पापा!” ऐसा कहने को दिल चाहा। पर क्या करते? माँ ने पानी लाया, पापा को नहलाया। मुझसे कहा, “सोनू जा शैम्पू लेकर आ।” मैंने शैम्पू लाया। पापा ने शैम्पू से मुँह धोया, बचा हुआ शैम्पू बदन में लगाया। तब जाकर लगा, “हाँ, ये हमारे ही पापा हैं!”

रात को सोते वक्त खटिया पर लेटे-लेटे हम सब ज़ोर-ज़ोर से हँस रहे थे। पापा भी हमारे साथ हँस रहे थे। ऐसा फैमिली ड्रामा हमारे घर रोज़ होता है।

सोनाली ज़िला परिषद् उच्च प्राथमिक स्कूल, गोवारी, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र में पाँचवीं कक्षा की छात्रा हैं।

पहली बार जब मैंने कहवा बनाया

सहर सलीम
चित्र: कनक शशि
अंग्रेज़ी से अनुवाद: भरत त्रिपाठी

मुझे हमेशा से कहवा पीने का बड़ा चाव रहा है, इतना कि मैं कहवा बनवाने के लिए हमेशा अपनी माँ के पीछे पड़ी रहती थी। कहवे से भरे समोवर[1] और कश्मीरी कुलचों[2] से लदी थालियों की पहली झलक पाना मेरे लिए परिवार में होने वाली किसी भी शादी के पहले होने वाली मेंज़ीरात (मेंहदीरात) के सबसे पसन्दीदा लम्हों में से एक रहा है। रात चढ़ने पर हवा में घुलती तुम्बकनार[3] और नुट[4] की तालों के साथ जैसे-जैसे जश्न बढ़ता जाता है, वैसे ही केसरिया (जाफरानी) कहवे की मीठी खुशबू भी बढ़ती चली जाती है।

कहवा हरी चाय (ग्रीन टी) का हमारा कश्मीरी रूप है जिसे दालचीनी व छोटी इलायची के साथ बनाया जाता है। शुरुआत में कहवे का रंग हल्का हरा होता है, जो केसर मिलाए जाने पर सुनहरा हो जाता है। मैं जो कहवा अकसर बनाती हूँ वह हरी चायपत्ती के बगैर होता है। बस उसमें थोड़ी-सी शक्कर और बादाम की कतरन मिलाओ और खुशियों से भरा प्याला आप के हाथ में होगा।

मैं हमेशा सोचा करती थी कि कहवा बनाने की विधि काफी झंझट वाली होगी। आपको एकदम सही रंग, सही स्वाद और सही खुशबू हासिल करना ज़रूरी है। और किसी भी चीज़ का बिलकुल सही अनुपात में न होना स्वीकार नहीं किया जाएगा। इसलिए मैं पहली बार कहवा बनाने का प्रयास बहुत बाद में कर पाई – 15 फरवरी, 2013 की ठण्डी, भीगी हुई और कर्फ्यू में बँधी शाम को। उस शाम को ज़िन्दगी में पहली बार मैंने कहवा बनाने की कोशिश की और जैसा मैं सोच रही थी मेरा कहवा उससे कहीं बेहतर बना था। जब हम सबने अपने लज़ीज़ केसरिया कहवे का जी भरकर लुत्फ उठाया, उसके कुछ ही घण्टे बाद मेरी भतीजी इस दुनिया में आई। इस वजह से मेरा पहला कहवा और भी ज़्यादा खास बन गया और सबकी यादों में हमेशा के लिए बस गया। तब से तो हमारे यहाँ रोज़ाना रात के खाने के बाद कहवा पीने की रस्म ही बन गई है।

कहवा चाय बनाने के लिए ज़रूरी चीज़ें

1 छोटी चम्मच कहवा चायपत्ती

2 छोटी इलायची

दो इंच का दालचीनी का टुकड़ा

4-5 बादाम

3 छोटी चम्मच शक्कर

केसर के 2-3 रेशे (अगर चाहें तो)

बनाने की विधि

पहला चरण

इलायची और दालचीनी को पीसकर पाउडर बना लो। बादाम के बारीक टुकड़े करके एक तरफ रख लो। एक पतीले में तीन कप पानी, कूटी हुई कहवा चायपत्ती, शक्कर, इलायची-दालचीनी पाउडर और केसर डालो।

दूसरा चरण

इस मिश्रण को उबलने रख दो। पाँच-छह मिनट तक उबालो जब तक कि चाय का रंग हल्का सुनहरा न हो जाए। अब इसे प्यालों में छान लो।

तीसरा चरण

हर प्याले में बारीक किए हुए बादाम के टुकड़ों को छितरा दो और गरमागरम चाय पेश करो।

---

1. धातु की बनी पारम्परिक कश्मीरी केतली
2. बिस्किट की तरह का पारम्परिक कश्मीरी व्यंजन
3. शादी में बजाया जाने वाला प्राचीन कश्मीरी वाद्ययंत्र जो तबले के जैसा होता है।
4. मटके की तरह का कश्मीरी वाद्ययंत्र

सहर सलीम आलेख 2014 में https://samavarblog.wordpress.com/2014/04/02/my-first-attempt--at-kehwa/ पर छपा था।

इधर चलें हम, उधर चलें

सुबह की चिड़िया और कीट

ओह, यदि तुम एक चिड़िया हो तो सुबह जल्दी उठने वाली चिड़िया बनो
और अपने नाश्ते के लिए कुछ कीट पकड़ लो
यदि तुम एक चिड़िया हो तो सुबह जल्दी उठने वाली चिड़िया बनो
लेकिन, यदि तुम एक कीट हो, तो देर तक सोते रहो

-शैल सिल्वरस्टीन

प्रकृति के हल

तुम्हें पता है दुनिया भर में 3000 से भी ज़्यादा तरह के केंचुए पाए जाते हैं। और यह सभी मिट्टी में रहना पसन्द करते हैं। यह पत्तियों के कूड़े में और मिट्टी के अन्दर रहते हैं और पेड़-पौधों के अवशेष जैसे पत्तियाँ, जड़, तने व अन्य कार्बनिक पदार्थ खाते हैं। कुछ केंचुए अपने बिल आड़े बनाते हैं, तो कुछ खड़े। इन्हें 'प्रकृति के हल' कहा जाता है क्योंकि मिट्टी में सुरंग बनाते हुए यह बड़ी मात्रा में मिट्टी को ऊपर-नीचे करते हैं। ऐसा करके यह मिट्टी को ज़्यादा पोली (ढीला) बनाते हैं। मिट्टी के पोली होने से गैसें सरलता से उसके अन्दर आ-जा पाती हैं। और इससे कवक, बैक्टीरिया और पौधों के लिए मिट्टी में रहना आसान हो जाता है

खाद के कारखाने

केंचुए अपने भोजन को पोषण से भरपूर सामग्रियों में विघटित करते (तोड़ते) हैं। केंचुओं की कई किस्मों का मल जंगल या खेत व कई अन्य जगहों के लिए बेहतरीन खाद का काम करता है। केंचुओं को तुम रसोई का कचरा जैसे सब्ज़ियों व फलों के छिलके आदि खिला सकते हो और घर पर ही केंचुआ खाद बना सकते हो। इसे वर्मीकम्पोस्ट कहते हैं।

क्या तुम किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हो जो वर्मीकम्पोस्ट बनाता या इस्तेमाल करता हो?

nature conservation foundation
science for conservation

फील्ड डायरी के लिए

अपना खुद का केंचुआघर बनाओ:

1. प्लास्टिक के 2 पारदर्शी बरतन लेना, एक थोड़ा बड़ा और दूसरा उससे छोटा। छोटे बरतन (यह प्लास्टिक की एक बोतल भी हो सकती है) को बड़े बरतन के अन्दर रखना। और दोनों बरतनों के बीच में कुछ इंच की जगह खाली रखना।
2. अब दोनों बरतनों के बीच की जगह में बगीचे से लाई मिट्टी भरना। इस मिट्टी में सूखी हुई पत्तियों के कुछ टुकड़े भी मिला देना। मिट्टी में नमी बनाए रखना, लेकिन उसे भिगोकर मत रखना।
3. एक छोटा मग, एक ट्रे और मिट्टी खोदने का कोई औज़ार जैसे खुरपी या कुल्हाड़ी आदि लेकर बगीचे में जाना। और हाँ, धमधमाते हुए मत चलना। ऐसा करने से केंचुए डर सकते हैं।

   किसी ऐसी जगह से खुदाई शुरू करना, जहाँ मिट्टी नरम हो। मिट्टी को ट्रे में इकट्ठा करना और केंचुओं को छाँटते जाना। जैसे ही तुम्हें कोई केंचुआ दिखे, झट-से उठाकर उसे मग में डाल देना।

   यदि खोदते समय तुम्हें मिट्टी में कोई केंचुए दिखें तो उन्हें धीरे-धीरे हल्के हाथों से पकड़ना। वो थोड़ा छटपटा सकते हैं पर आखिरकार वो मिट्टी से निकल जाएँगे। उन्हें ज़बरदस्ती झटके-से खींचकर मिट्टी से निकालने की कोशिश मत करना। बेहतर होगा तुम उनके आसपास की मिट्टी को ढीला छोड़ दो और फिर उन्हें पकड़ो।

   कई बार बारिश में बिलों में पानी भर जाने की वजह से केंचुए खुद-ब-खुद सतह के ऊपर आ जाते हैं। तुम तब भी उन्हें पकड़ सकते हो।
4. जब 3-5 केंचुए पकड़ लो तो तुम उन्हें प्लास्टिक के बरतनों के बीच में भरी मिट्टी में छोड़ सकते हो। बरतन के मुँह को किसी पतले कपड़े या जाली और धागे या रबरबैण्ड की मदद से बाँध लेना।
5. चुपचाप बैठकर इन केंचुओं को देखना।

   क्या तुमने उन्हें सुरंग बनाते हुए देखा?

   वो क्या खाते हैं?

   क्या तुमने उनका मल देखा?

   कुछ दिनों के बाद इन केंचुओं को छोड़ देना।

प्रतियोगिता

अपने केंचुआघर के बारे में हमें chakmak@eklavya.in पर लिखो और भारतीय जानवरों पर एक किताब जीतने का मौका पाओ। तुमने केंचुओं को क्या-क्या करते देखा? क्या तुमने उनका मल देखा? सब हमें बताना।

अनुवाद: कविता तिवारी
डिज़ाइन: इशिता देबनाथ बिस्वास

1.

जुगाड़

गोलाकार गत्ता (पाइपनुमा, जैसा अगरबत्ती के पैकेट में मिलता है), जूते के फीते या सुतली, ड्राइंग शीट, मार्कर या स्कैचपेन, कैंची, बराबर माप की दो पतली लकड़ियाँ, बराबर माप के बोतल के दो ढक्कन, नायलॉन का धागा, फेविकॉल और सेलोटेप

1. गोलाकार गत्ते को उतना लम्बा काट लो, जितना लम्बा लोमड़ी का शरीर चाहिए।
2. ड्राइंग शीट के एक कोने में चौकोर बनाओ, दूसरे कोने में लोमड़ी की शक्ल और तीसरे कोने में लोमड़ी की पूँछ काटकर इन्हें रंग लो। चौकौर वाले हिस्से को लोमड़ी के शरीर पर चिपका दो।
3. शरीर के निचले भाग और बीच के भाग में दोनों तरफ छेद कर लो।
4. चाकू को गैस पर गर्म करके दोनों ढक्कनों के बिलकुल बीच में छेद करो। छेद इतना बड़ा होना चाहिए कि सुतली और धागा दोनों उसमें जा सकें। इसके लिए किसी बड़े की मदद ले सकते हो।
5. अब सुतली का एक हिस्सा एक ढक्कन के बीच वाले छेद से निकालो और उस छोर में गाँठ बाँध लो।
6. सुतली के दूसरे छोर को शरीर के निचले हिस्से के छेद में से निकालो।
7. दूसरे छेद से सुतली निकाल लेने के बाद जैसे एक तरफ ढक्कन लगाया था, वैसे ही इस तरफ भी लगा लो।
8. अब सुतली के दो बराबर टुकड़े करो। एक टुकड़े को उस छेद में डालो जो शरीर के बीच में बनाया था। फिर दोनों छोरों में गाँठ बाँध लो।
9. यही प्रक्रिया बाएँ छेद में भी करो।
10. ड्राइंग शीट में जो चेहरा बनाया था उसे शरीर के ऊपरी भाग में चिपकाओ। ध्यान देना कि चेहरा एकदम बीच में हो, ठीक वैसे ही जैसे पपेट के चित्र में है। पूँछ को शरीर के पीछे चिपकाना।
11. लकड़ी के दोनों टुकड़ों से एक्स की आकृति बनाकर बीच में से बाँध लो। चाहो तो टेप से भी चिपका सकते हो।
12. लकड़ी के चारों कोनों में पतले धागे के टुकड़े बाँध लो।
13. दाएँ तरफ के धागे को ढक्कन के छेद से अन्दर डालो और बाएँ तरफ के धागे को दूसरे ढक्कन के छेद में। और इनके छोर ढक्कन से चिपका दो ताकि ये निकले नहीं।
14. अब चित्र में दिखाए तरीके से बाकी दो धागों को लोमड़ी के शरीर से चिपका दो। सामने वाला धागा लोमड़ी के शरीर के आगे वाले हिस्से में चिपकाना (चेहरे के पीछे) और पीछे वाला धागा शरीर के पिछले भाग में। दोनों ही धागे गत्ते से चिपके रहने चाहिए। बस अब बीच के जोड़ से पकड़कर अपने पपेट को नचाओ।

तुम भी बनाओ

पपेट लोमड़ी

अगर तुम्हें गोलाकार गत्ता नहीं मिलता है तो प्लास्टिक की बोतल का इस्तेमाल कर सकते हो।

2.

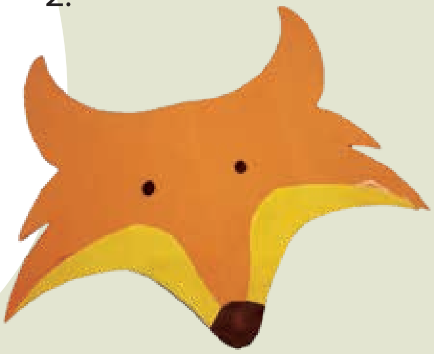

3.

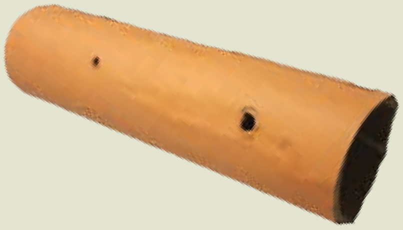

4.

5.

पाली और चींटी

जसबीर भुल्लर
चित्र: ऋषितोनोय दत्ता

एक थी चींटी। चींटी को भूख लग रही थी। उसे भोजन की गन्ध आई। वह गन्ध की ओर चल पड़ी। रास्ते में, खेत की मेड़ पर एक लड़का बैठा हुआ था। न तो चींटी ने लड़के को देखा और न ही लड़के ने चींटी को। लड़के के लिए चींटी किसी बिन्दु की तरह थी तो चींटी के लिए लड़का पहाड़ की तरह। दोनों अपने-अपने खयालों में गुम थे। चींटी लड़के के नज़दीक से गुज़रते हुए आगे निकल गई।

लड़के का नाम था पाली। कल से पाली के स्कूल में अलग-अलग खेलों के लिए खिलाड़ियों का चुनाव होना था। कुछ विद्यार्थियों ने इसके लिए अपने-अपने नाम भी लिखवा दिए थे। लेकिन पाली पीछे खड़ा रहा था। उसे लगता था कि वह शरीर से कमज़ोर है, कद में छोटा है, इसलिए उससे किसी भी खेल में अच्छा नहीं खेला जाएगा। छुट्टी से पहले ही वह बस्ता उठाकर घर की ओर चल पड़ा।

पर अब उसे अपने ऊपर खीझ आ रही था। वह निराश था। खेत की मेड़ पर बैठे, सोच में डूबे हुए पाली ने अनायास ही अपनी उँगली से मिट्टी के ऊपर एक गहरी लकीर खींच दी।

चींटी आगे बढ़ती जा रही थी। अचानक उसके रास्ते में एक गहरी खाई आ गई। वह चौंककर रुक गई। यह खाई पाली की उँगली से खिंची हुई लकीर थी। चींटी ने तय किया कि वह खाई से उतरकर दूसरी ओर की चढ़ाई चढ़कर उस पार पहुँच जाएगी।

खाई की ढलान भी तीखी थी, और दूसरी ओर की चढ़ाई भी। चींटी फिसल सकती थी। उसके ऊपर मिट्टी गिर सकती थी। वह मिट्टी के नीचे दब भी सकती थी। पर थक-हारकर बैठ जाना और पीछे हटना चींटी को मंज़ूर नहीं था। उसने खाई में उतरना शुरू कर दिया। कई बार वह फिसली भी लेकिन चलती गई, चलती गई। अन्त में उसने खाई को पार कर लिया और आगे बढ़ गई।

एक और लकीर खींचते समय पाली ने चींटी को देख लिया। उसने अपना हाथ पीछे खींच लिया। वह उसे देखने लगा। उसने मन ही मन चींटी की ज़िद और हिम्मत की दाद दी। अब उसने अचेतन मन से चींटी के साथ खेलना शुरू कर दिया। उसने बस्ते में से पानी की बोतल निकाली और थोड़ा पानी चींटी के रास्ते में गिरा दिया।

चींटी ने पानी के गिरने की आवाज़ सुनी। उसे लगा जैसे बादल फट गया हो। वह कुछ पलों के लिए ठिठक गई। गिरा हुआ पानी उसके लिए झील की तरह था। झील ने उसका रास्ता रोक लिया था। अब वह क्या करती। उसने झील के किनारे-किनारे चलना शुरू किया क्योंकि शायद वह जानती थी कि रुका हुआ पानी आमतौर पर गोल दायरे में होता है।

चींटी झील के अगले छोर तक पहुँच गई। भोजन की गन्ध तेज़ हो रही थी। अब चींटी भोजन से ज़्यादा दूर नहीं थी।

अचानक वहाँ अँधेरा हो गया। लेकिन अभी तक तो उजाला था, अचानक रात कैसे हो गई! चींटी हैरान थी, मगर वह चलती रही। फिर उसके सामने अचानक से एक दीवार आ गई। दीवार पहले तो वहाँ नहीं थी! पर चींटी हार मानने वाली नहीं थी। वह दीवार के किनारे-किनारे चलने लगी।

आखिरकार दीवार भी समाप्त हो गई। चींटी आगे बढ़ने लगी तो दीवार फिर उसके सामने आ गई। यह कैसा जादू था! चींटी ने परेशान होकर ऊपर देखा। पाली ने झुककर चींटी के रास्ते में अपना हाथ रख दिया था और उसकी परछाई ने धूप रोक दी थी। यह परछाई ही चींटी की रात थी। पाली का हाथ ही चींटी के लिए दीवार था।

चींटी ने पाली को कुछ भी नहीं कहा था, फिर भी पाली समझ गया कि चींटी मंज़िल पर पहुँचकर ही साँस लेने वाली थी। पाली को खुद पर गुस्सा आ रहा था। उसने चींटी के रास्ते में रखा हुआ अपना हाथ उठा लिया। चींटी अपनी मंज़िल की तरफ बढ़ गई। पाली ने एक बार अपने बस्ते की गाँठें खोलीं और कुछ निश्चय के साथ फिर से बाँध लीं।

जब पाली वहाँ से उठा, उसके भीतर कल से होने वाले खेल मुकाबलों को जीतने का जोश था।

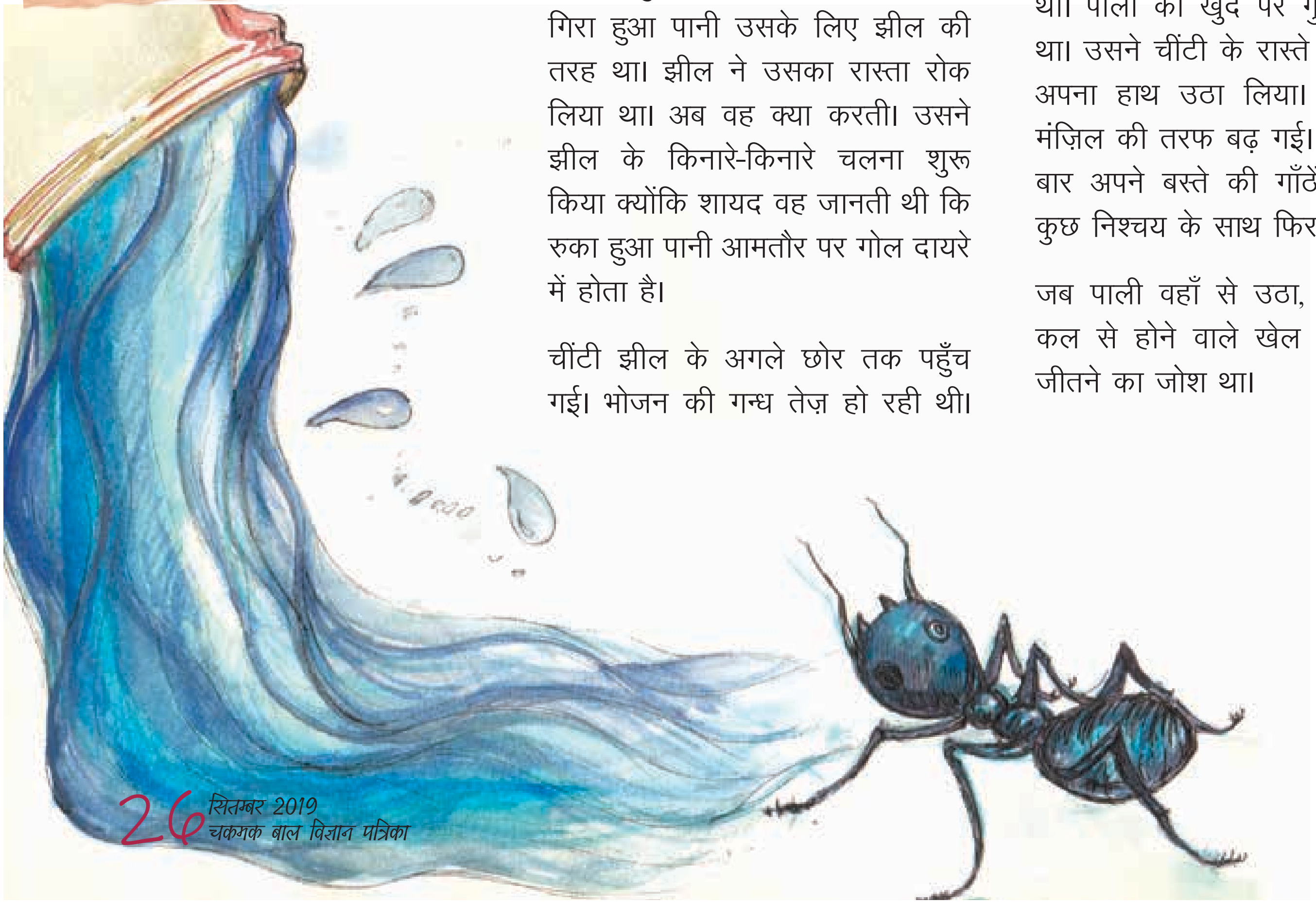

सोने से सुनहरा

सुशील जोशी

लोहे, तांबे जैसी सामान्य धातुओं से सोना बनाने का ख्वाब बहुत पुराना है। दुनिया भर में कई लोगों ने इसकी कोशिश की है। और इसके लालच से बचना मुश्किल ही है। आखिर सोना इतना कीमती जो ठहरा। लेकिन प्राचीन काल में की गई कोशिशें न सफल होनी थीं, और न हुईं।

लेकिन परमाणु सिद्धान्त और परमाणु की बनावट समझ में आने के बाद नए सिरे से कोशिशें हुईं। और इनमें सफलता भी मिली। पहले तो पता चला कि सारे तत्व परमाणुओं से बने हैं और ये परमाणु टूट नहीं सकते। मतलब किसी तत्व का परमाणु हमेशा के लिए उसी तत्व का परमाणु रहेगा। फिर कई वैज्ञानिकों के प्रयासों से यह समझ में आया कि परमाणु अटूट नहीं है बल्कि कई छोटे-छोटे कणों से मिलकर बना है। इन कणों को इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन और न्यूट्रॉन कहते हैं। इनकी संख्याओं के आधार पर तय होता है कि किसी परमाणु में कैसे गुण होंगे और वह किस तत्व का परमाणु होगा। जैसे यदि किसी परमाणु में एक इलेक्ट्रॉन और एक प्रोटॉन हो तो वह हाइड्रोजन का परमाणु है। वैसे एक इलेक्ट्रॉन, एक प्रोटॉन और एक या दो न्यूट्रॉन होने पर भी वह हाइड्रोजन का ही परमाणु रहता है। ऐसे ही हरेक तत्व के परमाणुओं में इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन और न्यूट्रॉन की संख्या निश्चित होती है। तो वैज्ञानिकों ने सोचा कि क्या हम एक निश्चित संख्या में ये कण मिलाकर मनचाहा तत्व बना सकते हैं। और कोशिशें शुरू हो गईं।

पुराने से नए तत्व

ऐसा करने में एक समस्या यह थी कि इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन और न्यूट्रॉन अलग-अलग नहीं मिलते है। ऐसा नहीं है कि तुम बाज़ार जाओ और मावा, शक्कर वगैरह खरीदकर ले आओ और गुलाबजामुन बना लो। इलेक्ट्रॉन वगैरह परमाणुओं में जुड़े रूप में ही मिलते हैं। और इन्हें परमाणु में से निकालना भी आसान नहीं होता। तो आगे कैसे बढ़ें?

वैज्ञानिकों ने इसका एक तरीका ढूँढ निकाला। तरीका था परमाणुओं को तोड़ने का। वैज्ञानिकों ने देखा कि कुछ तत्वों के परमाणु अपने आप टूटते रहते हैं। जब ये परमाणु टूटते हैं तो इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन वगैरह बाहर निकलते हैं। इस तरह से जब किसी परमाणु में से कुछ कण निकल जाते हैं तो वह परमाणु किसी अन्य तत्व का परमाणु बन जाता है। जैसे युरेनियम नामक एक तत्व पड़े-पड़े टूटता रहता है और टूटते-टूटते यह लेड, फिर थोरियम, प्लूटोनियम वगैरह तत्वों में बदल जाता है।

किसी परमाणु में से निकले ये इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन वगैरह जब दूसरे परमाणुओं से टकराएँगे तो उन्हें भी तोड़ डालेंगे क्योंकि इनमें बहुत अधिक ऊर्जा होती है। लेकिन वैज्ञानिकों ने देखा कि कुछ परिस्थितियों में ये इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन वगैरह किसी अन्य परमाणु के साथ जुड़ भी सकते हैं। यदि किसी परमाणु में नए इलेक्ट्रॉन या प्रोटॉन जुड़ेंगे तो वह एक नया परमाणु अर्थात नया तत्व बन जाएगा। तो नए तत्व बनाने की एक विधि तो हाथ लग गई। अब देखें कि क्या इस तरह करके हम सोना बना सकते हैं।

सोने के प्रत्येक परमाणु में 79 इलेक्ट्रॉन, 79 प्रोटॉन और 118 न्यूट्रॉन होते हैं। यानी हमें किसी ऐसे तत्व का परमाणु चाहिए जिसमें लगभग इतने ही इलेक्ट्रॉन वगैरह हों। यदि कम हुए तो हम और कण जोड़ देंगे और अधिक हुए तो कुछ कण निकालने की व्यवस्था करनी होगी। प्रसिद्ध वैज्ञानिक ग्लेन सीबोर्ग ने दूसरा रास्ता पकड़ा।

सीबोर्ग एक अमरीकी वैज्ञानिक थे जिन्होंने अपनी प्रयोगशाला में कम से कम 10 नए तत्व बनाए। अपनी तकनीक का उपयोग करते हुए उन्होंने आयोडीन और लौह धातु के नए रूप भी बनाए। यह चिकित्सा में बहुत उपयोगी साबित हुए थे। उन्हें इस सारे काम के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। यही नहीं उनके नाम के आधार पर एक तत्व का नाम भी सीबोर्गियम रखा गया है।

बिस्मथ से सोना

1980 में उन्होंने बिस्मथ नामक तत्व के परमाणुओं को सोने के परमाणुओं में बदलने में सफलता प्राप्त की थी। बिस्मथ के प्रत्येक परमाणु में 83 इलेक्ट्रॉन और 83 प्रोटॉन होते हैं। सीबोर्ग ने अपनी तकनीक से बिस्मथ के परमाणुओं में से प्रोटॉन और न्यूट्रॉन निकाल बाहर किए और सोने के हज़ारों परमाणु बनाए। यदि मान लें कि सीबोर्ग ने सोने के 10000 परमाणु बनाए थे, तो यह पता कर सकते हैं कि यह कितना सोना होगा।

सोने का परमाणु भार लगभग 197 है। रसायन शास्त्रियों ने पता लगा लिया है कि किसी भी तत्व की परमाणु भार के बराबर मात्रा लें, तो उसमें लगभग 10^{23} परमाणु होते हैं। 10^{23} का मतलब होता है 1 के बाद 23 शून्य। सोने के इतने परमाणुओं का वज़न 197 ग्राम होगा। अब तुम कल्पना कर सकते हो कि सोने के 10000 परमाणुओं का वज़न कितना होगा।

तो पक्की बात है कि सीबोर्ग ने जो सोना बनाया वह बहुत महँगा था। और उसके गहने बनाकर पहनना दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति के लिए भी नामुमकिन होगा। मगर विज्ञान आगे बढ़ा और तत्वों और उनके एक-दूसरे में परिवर्तन की हमारी समझ भी आगे बढ़ी।

वैसे प्रकृति में सोना कैसे बना था? ऐसा माना जाता है कि दो अति विशाल तारों की आपसी टक्कर में सोने का निर्माण हुआ था। और आज भी जो सोना हमें उपलब्ध है वह इसी टक्कर का नतीजा है। सोना इतना कम क्रियाशील है कि न तो उसे जंग लगती है और न ही वह किसी अन्य तरीके से बिगड़ता है।

सोने से भी सुनहरा

लेकिन वैज्ञानिकों को ऐसे उत्कृष्ट सोने से सन्तोष नहीं था। वे तो और भी ज़्यादा सुनहरा सोना बनाने के इच्छुक थे। यह काम बेंगलुरु के सेंटर फॉर नैनो एंड सॉफ्ट मैटर साइन्सज़ के वैज्ञानिकों ने 2015 में कर दिखाया था। उन्होंने नए सिरे से सोना तो नहीं बनाया मगर सोने को और उत्कृष्ट बना दिया। सेंटर के वैज्ञानिकों ने सोने का एक यौगिक (गोल्ड क्लोराइड) लिया और उसे एक अन्य पदार्थ (टेट्राऑक्टाइल अमोनियम ब्रोमाइड) के साथ मिलाकर 220 डिग्री सेल्सियस पर गर्म किया। करीब आधे घण्टे तपाने के बाद उन्हें शुद्ध सोना मिला जो प्राकृतिक सोने से भी ज़्यादा अक्रिय था। एक बार फिर यह सोना भी शायद आभूषण बनाने के हिसाब से तो बहुत महँगा है, लेकिन रासायनिक दृष्टि से यह ज़्यादा उपयोगी है।

तो पारस पत्थर खोजने की जो तमन्ना इन्सानों ने सदियों से पाली थी वह सिर्फ पूरी नहीं हुई, बल्कि सोने से भी बेहतर सोने के रूप में पूरी हुई।

मेरे घर पर चींटियों का झुण्ड

काजल

चित्र: शुभम लखेरा

एक रोज़ हमने मम्मी के साथ शनि बाज़ार से एक किलो पेठा लिया। फिर घर आकर, हाथ-मुँह धोकर हम पेठा खाने लगे। खाते वक्त मेरे हाथ से पेठे का एक टुकड़ा गिर गया। मम्मी ने कहा, "इसे बालकनी में जाकर रख दे.. चिड़िया आकर खा लेगी।" मैं पेठे का टुकड़ा रखने जा ही रही थी कि आवाज़ आई, "काजल!" मैंने बालकनी से झाँका तो मेरी दोस्त नीचे खड़ी थी। "काजल, नीचे आ जा, साढ़े छह बज गए। खेलने का टाइम हो गया है और हम बच्चों को बुलाने जा रहे हैं... आ जइयो!" मैंने जवाब दिया, "आ रही हूँ।" जल्दी से पेठे को बालकनी में रखकर मैं बाल काढ़ने लगी। फटाफट चप्पल पहनी और कहा, "मम्मी मैं जा रही हूँ खेलने।" मम्मी ने पीछे से आवाज़ लगाई, "जल्दी आ जाना..."

मैं नीचे पहुँची और हम लोग खेलने लगे। खेलते हुए लगभग एक घण्टा गुज़र गया तो मम्मी ने आवाज़ मारी, "काजलऽऽऽऽऽऽऽ।" मैं ऊपर पहुँची तो मम्मी ने कहा, "काजल, पानी भर ले, पानी आ रहा है।" बालटी का बासी पानी खाली करने को मैंने मग्गे से पेड़ पर पानी डाला तो एक चींटी मेरे हाथ पर आ गई। मैंने अपना हाथ खींचकर देखा तो वो मुझे डरी-डरी सी लग रही थी। मैंने दया करके उसे छोड़ दिया। मेरे छोड़ने पर वो इधर-उधर भागने लगी। मुझे पता चल गया कि वह अपने साथियों को ढूँढ रही है। तभी मेरी नज़र पेड़ के कोने में बने गड्ढे पर पड़ी। उसमें से चींटियों का एक झुण्ड लाइन बनाकर आ रहा था। और जहाँ मैंने पेठे का टुकड़ा रखा था उसमें से थोड़ा-थोड़ा पेठा लेकर वो वापस अपने बिल में जा रही थीं। मैंने देखा वो चींटियाँ थोड़ा भी इधर-उधर नहीं हो रही थीं... एकदम लाइन से आ-जा रही थीं। जब सामने से कोई चींटी आती तो थोड़ा रुक जाती। मैंने एक चींटी को हाथ में लेना चाहा तो वो कभी मेरी तरफ़ तो कभी इधर-उधर भाग रही थी। वो भटक गई थी।

मैंने सोचा ये चींटियाँ आमने-सामने होने पर रुक क्यूँ जाती हैं? मुझे लगा जैसे हम नमस्ते करके जाते हैं, तो रुक जाते हैं.. लगता है चींटी भी हमें नमस्ते या बाए करके जाती हैं। इतने में मेरी दीदी आ गईं। मैंने उनसे पूछा, "चींटियाँ लाइन में जाती हैं, लेकिन अगर एक चींटी भी हिल गई तो सब इधर-उधर उधर

होने लग जाती हैं, ऐसा क्यूँ?” दीदी ने कहा, “चींटी गन्ध छोड़ती हुए चलती है। इसलिए दूसरी चींटी सूँघकर उसके पीछे-पीछे चलती है।” “हाँ, सही कहा! चींटियाँ कितनी समझदार होती हैं और कितनी मेहनत करती हैं!”

“चल, अब मैं खाने जा रही हूँ.. तू पानी भर ले..”, दीदी ने कहा। मैंने कहा, “अरे! मैं तो भूल ही गई थी पानी भरना।” जब मैं पानी भर रही थी तभी मेरी दोस्त नाज़िया आई और उसने कहा कि चल ना दोबारा खेलते हैं। लेकिन मेरे दिमाग में चींटियाँ ही घूम रही थीं तो मैंने उससे कहा, “सब बोलते हैं, लाल चींटी तुम्हारी होती है और काली चींटी हमारी।” नाज़िया कहने लगी, “नहीं, काली चींटी हमारी होती है।” बस इसी बात पर हम लोग झगड़ने लगे। झगड़ते-झगड़ते थोड़ी देर हो गई तो मैंने कहा, “बस बहुत हुआ! लड़ने से कुछ नहीं होगा... मम्मी से पूछ लेते हैं।” हमने मम्मी से जाकर पूछा और उन्हें लाल चींटी और काली चींटी वाली झगड़े की सारी बात बता दी।

मम्मी कहने लगीं, “तुम दोनों भी ना....! अरे! चींटियाँ तो सबकी होती हैं ना!”

“मम्मी, हम दोनों तो कब से लड़ रहे थे...”

“अरे! तो लड़ने से पहले किसी से पूछ लेना चाहिए था ना... ठीक है!”

“लेकिन मम्मी, अगर किसी ने हमें गलत चीज़ बता दी तो?”

इतने में एक चींटी ने आकर तेज़-से मेरे पैर में काटा और मैं चिल्लाई... आऽऽऽऽ!

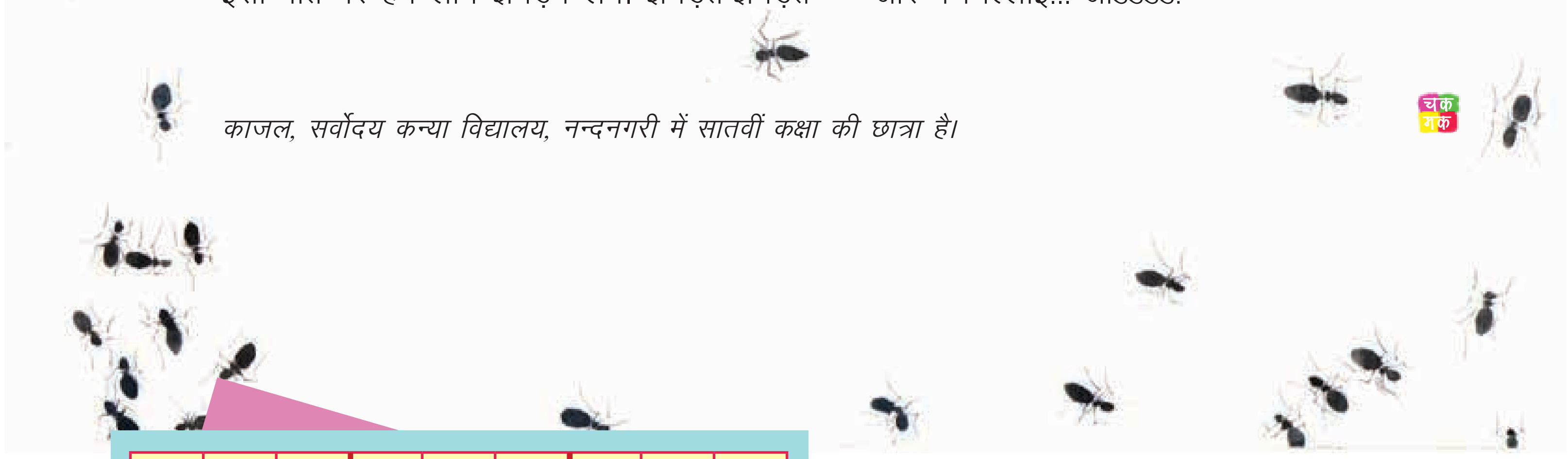

काजल, सर्वोदय कन्या विद्यालय, नन्दनगरी में सातवीं कक्षा की छात्रा है।

सुडोकू-23

				4	9	8		5
	5	9			2		7	3
6	8		3					
		5			3	2		
7			5	8				9
8	9				7		4	1
2			1					
	4	8			6	7	1	
		1		2			5	6

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरना। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय हमें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि उन डब्बों में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

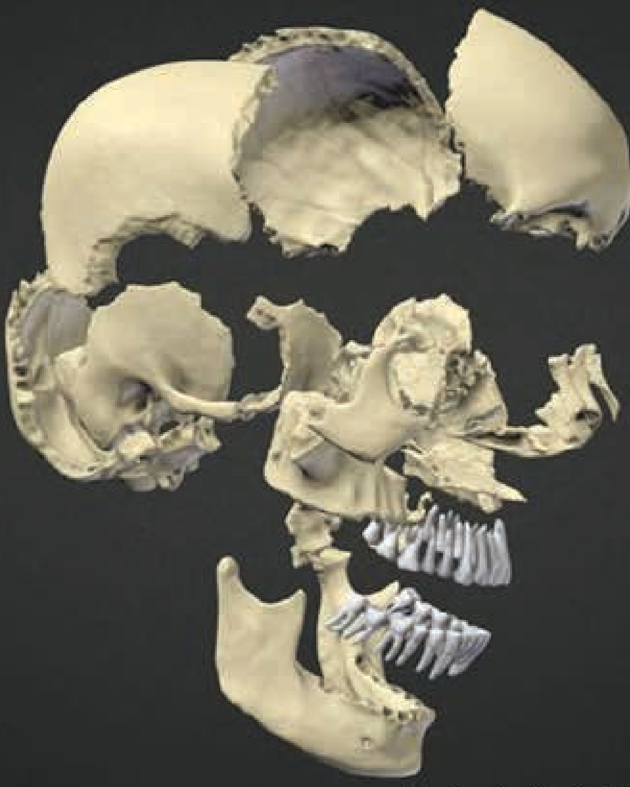

खोपड़ी में इतनी हड्डियाँ क्यों हैं?

अनुमान लगाओ कि तुम्हारी खोपड़ी में कितनी हड्डियाँ होंगी। शायद तुम्हारा अनुमान दो या इससे कुछ अधिक हड्डियों का हो। तो तुम्हें बता दें कि हमारी खोपड़ी में कुल 22 हड्डियाँ होती हैं। 8 हड्डियाँ कपाल में और 14 चेहरे की।

तुम्हें शायद यह जानकर आश्चर्य होगा कि अलग-अलग जीवों की खोपड़ी में हड्डियों की संख्या अलग-अलग होती है। मगरमच्छ की खोपड़ी में 53 हड्डियाँ होती हैं, जबकि मछलियों की खोपड़ी में तकरीबन 130 हड्डियाँ होती हैं। वैसे अब तक खोपड़ी में सबसे अधिक हड्डियाँ (156) लुप्त हो चुकी एक मछली के जीवाश्म में मिली हैं।

विभिन्न रीढ़धारी जीवों में जन्म के समय खोपड़ी में हड्डियों की संख्या अधिक होती है। युवावस्था आने तक कुछ जीवों में कुछ हड्डियाँ आपस में जुड़ जाती हैं, जबकि कुछ जीवों में ये अलग-अलग बनी रहती हैं। जैसे, स्तनधारी जीवों के भ्रूण की खोपड़ी में लगभग 43 हड्डियाँ होती हैं। उम्र के साथ इनमें से कुछ हड्डियाँ आपस में जुड़ जाती हैं।

किसी रीढ़धारी जीव की खोपड़ी में कुल कितनी हड्डियाँ होंगी, आगे जाकर कितनी हड्डियाँ जुड़ेंगी, जुड़ाव का स्थान व समय क्या होगा इस सब में विविधता होती है। और इससे पता लगता है कि उस जीव की खोपड़ी का उपयोग कैसा है, खोपड़ी में कितने लचीलेपन की ज़रूरत है।

जीव की खोपड़ी जितनी अधिक लचीली होगी, उसकी खोपड़ी में उतनी अधिक हड्डियाँ होंगी। मसलन मछलियों की खोपड़ी बहुत लचीली होती है और उनकी खोपड़ी में हड्डियों की संख्या बहुत अधिक होती है। उनमें बहुत कम हड्डियाँ आपस में जुड़ती हैं। वैसे ज़मीन पर रहने वाले रीढ़धारी जीवों की तुलना में मछलियों को अपने सिर का सन्तुलन बनाए रखने के लिए गुरुत्व बल से जूझना नहीं पड़ता। इसलिए उनकी हड्डियाँ हल्की और लचीली होती हैं। पक्षियों की खोपड़ी भी काफी लचीली होती है। जैव विकास में जीवों की खोपड़ी अलग-अलग तरह से विकसित हुई हैं। खोपड़ी की हड्डियों में यह विविधता जीव विकास की समृद्ध प्रक्रिया के बारे में बताती है।

स्रोत फीचर्स से साभार

अगर मुझे एक दिन के लिए लड़का बनने का मौका मिले तो मैं घर में आराम करता। तब मेरे लिए आराम ही आराम होता। कोई काम करने को नहीं बोलता। और मैं घूमता रहता। घर में टीवी देखता। मेरा जहाँ जाने का मन करता बिना पूछे जाता। मेरे छोटे-छोटे बाल होते। बाल भी सही रहते। सर में दर्द नहीं होता और स्कूल के लिए लेट भी नहीं होता। मम्मी खूब सारा प्यार करतीं। लड़की होने पर तो सब डाँटते रहते हैं। मम्मी प्यार भी नहीं करतीं। मुझे खाना बनाना, झाड़ू मारना, बर्तन-कपड़े धोने भी नहीं पड़ते।

सृष्टि, पाँचवीं, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, गणेशपुर, उत्तराखण्ड

मैं अगर लड़का बन गई तो यहाँ से वहाँ कैसे भी कूद सकूँगी और तो और कैसे भी बैठ सकूँगी। घर के काम नहीं करूँगी, मैं सिर्फ खेलूँगी। मैं अकेले साइकिल से पाठशाला जाऊँगी और ज़ोर-से साइकिल चलाऊँगी। तब मैं बॉयकट करूँगी। लड़कों की तरह रहूँगी और उनके जैसे कपड़े पहनूँगी। पबजी खेलूँगी। खूब देर तक बाहर घूमूँगी। सिनेमा देखने जाऊँगी। पढ़ाई नहीं करूँगी। लड़कों की तरह घड़ी पहनूँगी। कक्षा में बहुत बड़-बड़ करूँगी। फोरव्हीलर चलाऊँगी और मूँछें बढ़ाऊँगी।

जान्हवी पोल, छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

अगर मुझे लड़का बनने का मौका मिलता तो मैं अपने फोन से एक-दो फोटो खींचूँगी क्योंकि मुझे वो दिन हमेशा के लिए याद रखना है। उस एक दिन में मैं लड़कों वाले कपड़े खरीदती और उन्हें पहनकर स्टाइल में साइकिल चलाती, क्योंकि वो मेरी ज़िन्दगी का सबसे खास दिन होता। और उस दिन मैं अपने लड़के दोस्तों के साथ घूमने जाती।

नन्दिनी रावत, सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

हम लड़का क्यों बनें हम शुरू से लड़की हैं तो हम लड़की ही रहेंगे। हमें लड़का नहीं बनना। भगवान जिसे जो बनाकर भेजता है वो वही रहता है, बदलता नहीं है।

प्रीति वर्मा, पहली, लश्करी एकेडमी फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

अगर मैं लड़का बन गई तो मैं लड़कों जैसे कपड़े पहनूँगी। दिन भर खेलूँगी और शाम को घर वापस आऊँगी। मैं लड़कों जैसे माँ की कोई बात नहीं सुनूँगी। और मैं मेरे भाई की शादी में सबके सामने नाचूँगी। मैं लड़कों जैसे बाल बनाकर स्टाइल मारूँगी। लड़के जैसे लड़कियों को तंग करते हैं मैं भी वैसे ही तंग करूँगी। मैं मेरे दोस्तों के साथ घूमने जाऊँगी और पैसे उड़ाऊँगी। मैं मेरा नाम 'स्वराज' रखूँगी।

तनिष्का इंदलकर, छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

अगर मुझे एक बार लड़की बनने का मौका मिला तो मैं लड़की बनना नहीं चाहूँगा क्योंकि कई लोग ऐसा चाहते हैं कि उनके घर में किसी लड़की का जन्म न हो। और कई लोगों को जब यह पता चलता है कि लड़की पैदा होने वाली है तो वे उसे मार देते हैं जिससे लड़की की ज़िन्दगी शुरू होने से पहले ही खतम हो जाती है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि मैं कभी लड़की ना बनूँ। मैं लड़का हूँ और मुझे लड़का बनना ही पसन्द है।

सुजल राणा, सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

एक दिन के लिए लड़का बनना बहुत कठिन है फिर भी मैं लड़का बनना पसन्द करूँगी। लड़का बनना अच्छा है पर उसमें कष्ट भी बहुत है। एक दिन के लिए लड़का बना दिया जाए तो लड़कों की ज़िन्दगी कैसी रहती है वह पता चल सकता है। लड़की होकर मुझे लड़का बना दिया जाए तो उनके समान बर्ताव करना, उनके जैसे बातचीत करना कठिन होगा। लेकिन मैं लड़का और लड़की में भेदभाव नहीं करती इसलिए मुझे लड़का बनना अच्छा लगेगा। लड़का बनूँगी तो उनके समान कष्ट उठाने होंगे। अगर लड़के और लड़कियाँ मिल-जुलकर काम करें व रहें तो उनके कष्ट कम हो जाएँगे और दोनों में भेदभाव नहीं रहेगा।

रानी शर्मा, आठवीं, आनन्द निकेतन विद्यालय, सेवाग्राम, वर्धा, महाराष्ट्र

एक दिन में घास काटना, गाय का दूध दूहना, लिपाई-पुताई करना सीखता। और सिर पर भारी बोझा कैसे लाते हैं यह तो सीखता ही, साथ में मैं अपनी सहेलियों के साथ मस्ती करता। सुबह जल्दी उठने पर कैसा लगता? पूरे दिन भर काम करने के बाद थकान की नींद की रिकॉर्डिंग करता।

केशव, दसवीं, केवर्स, उत्तराखण्ड

यदि एक दिन के लिए लड़का बनना हो तो मैं लड़कों जैसे फैशन करूँगी। लड़कों जैसे छोटे और खड़े बाल रखूँगी। अपने छोटे भाई से झाड़ू मरवाऊँगी और खाना बनवाऊँगी। जैसे कि भाई लोग हमको बोलते हैं कि तुम्हें कितना सारा काम करना पड़ता है, वैसे ही हम उनको बोलेंगे। और अगर वो कहेंगे कि तुम तो रोज़ के लिए लड़के नहीं हो, हम तो एक ही दिन काम कर रहे हैं तो हम बोलेंगे कि अपना काम फटाफट करो और ठीक से करो। मैं बस एक दिन के लिए लड़का बनूँगी और जैसे लड़के नाचते हैं वैसे ही नाचूँगी।

अदिति नेगी, पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

अगर मैं लड़का बन जाऊँगी तो रोज़ाना मज़दूरी करके अपने परिवार की देखभाल करूँगी। पढ़ाई करने में अपने छोटे भाई की मदद करूँगी और फिर एक दिन जब वो एक सफल इन्सान बन जाएगा तो मुझे बहुत खुशी होगी। यदि हमारे पास पैसे हो जाएँगे तो फिर कोई भी हम पर हँसेगा नहीं। कोई मेरे भाई को गरीब बोलकर हँसेगा नहीं और उसे मारेगा नहीं। तब मुझे अच्छा लगेगा। जब मेरे भाई को चिट्ठी (नौकरी के लिए) मिलेगी तब गाँव के लोग हमें इज़्ज़त भरी नज़रों से देखेंगे। तब मुझे बहुत ही अच्छा लगेगा। उस समय जब मेरा भाई मुझे और मैं उसके गले मिलूँगी तो हमारे घर में खुशियों की लहर उठेगी।

गरिमा दास, चौथी, नाटून, खरजानपर एल पी स्कूल, मजूली, आसाम

काश मुझे एक दिन के लिए यदि लड़का बनने का मौका मिले तो मैं घर और बाहर के वो सारे काम करना चाहूँगी जो मेरे भैया और पिताजी करते हैं क्योंकि माँ मुझे सिर्फ घर के काम करने को देती है। बाहर के काम करने नहीं देती है। कहती है तुझसे नहीं हो पाएगा और माँ को ऐसा कहना मुझे अच्छा नहीं लगता।

अंशिका पुण्डीर, पाँचवीं, राजकीय प्राथमिक विद्यालय मंज्याड़, चम्बा, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

सवाल तो काफी इंटरेस्टिंग है लेकिन मैं इंट्रेस्टेड नहीं हूँ। अगर मेरे को एक दिन के लिए लड़का बनना पड़े तो मैं फिर से वही लड़की वाली ड्रेसअप करके व मेकअप करके लड़की वाले गेटअप में आ जाऊँगी। दरअसल मैं ट्विन्स थी पर अब नहीं हूँ। अभी मैं पूरे घर में इकलौती लड़की हूँ। वैसे भैया लोगों के साथ रहते-रहते कुछ हरकतें लड़कों जैसी भी है। अगर मैं सच में एक दिन के लिए लड़का बनती हूँ तो घरवालों को दिल टूट जाएगा। वे उदास हो जाएँगे। आखिर इकलौती जो हूँ... और वैसे भी, मैं लड़की ही अच्छी हूँ और खुश भी।

निशा गुप्ता, ग्यारहवीं, बाल भवन किलकारी, पटना, बिहार

चित्र: आदेश अविनाश कारकर, छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

तुम भी जानो

देश ने मनाया मातम - एक हिमनदी का

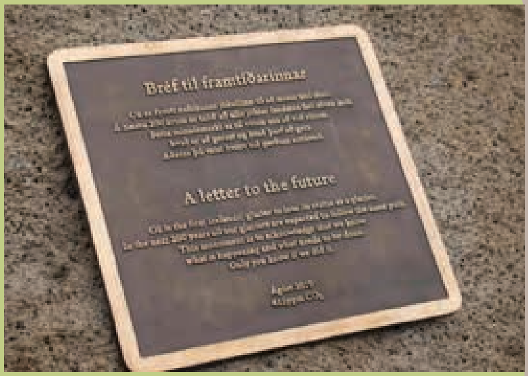

आइसलैंड में ओक्जोकुल नाम की एक हिमनदी है। 1890 में यह 16 वर्ग किलोमीटर बड़ी थी। लेकिन 2012 तक यह इतनी पिघल गई कि सिर्फ 0.79 वर्ग किलोमीटर यानी कि रेल के दो डिब्बों जितनी रह गई। और आज यह लगभग गायब ही है। किसी समय आइसलैंड की लगभग दस हज़ार वर्ग किलोमीटर ज़मीन हिमनदियों से ढँकी हुआ करती थी। जलवायु परिवर्तन और बढ़ते तापमान के कारण इसमें कमी आती जा रही है।

इस कारण आइसलैंड के लोग अपने भविष्य को लेकर काफी चिन्तित हैं। उनका अनुमान है कि अगले 200 सालों में उनके देश की सभी हिमनदियाँ पिघल जाएँगी। इसलिए जलवायु परिवर्तन के लिए प्रति सचेत करने के लिए वहाँ के लोगों ने ओक्जोकुल हिमनदी के लिए मातम मनाया। इस मातम में देश के प्रधानमंत्री समेत कुछ 100 लोग शामिल हुए। इस हिमनदी के खतम हो जाने में मनुष्यों की भूमिका को दर्ज करते हुए वहाँ एक तख्ती भी लगाई गई है।

मनुष्य की उड़ान

फ्रांसिसी फ्रैंकी ज़पाटा इंग्लैंड से फ्रांस पानी के ऊपर से उड़कर गया। तुम सोच रहे होगे कि इसमें कौन-सी खास बात है। लेकिन खास बात ये है कि उड़ने के लिए उसने न तो प्लेन का इस्तेमाल किया, न हैलीकॉप्टर का और ना ही बलून या ग्लाइडर का। यह दूरी उसने एक छोटे-से होवरबोर्ड पर चढ़कर तय की। यह होवरबोर्ड पाँच जैट मोटर वाला एक तख्ता है, जो केरोसिन से चलता है। केरोसिन उसकी पीठ पर टँगे बैकपैक में था। 35 किलोमीटर का यह सफर ज़पाटा ने महज़ 2 घण्टों में पूरा किया। बीच में एक बार एक बोट पर उतरकर उसने फिर से केरोसिन भरवाया। ज़पाटा का कहना है कि आखिरी 6 किलोमीटर में उसे बहुत मज़ा आया। इस दौरान वह 160-170 किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से उड़ रहा था।

नज़रों से रोक सकते हो इनको

ब्रिटेन में समुद्र किनारे बसे कुछ शहरों में सीगल पक्षियों ने लोगों को परेशान कर रखा है। हालाँकि इसमें सीगल का कोई दोष नहीं है। चिप्स व खाने की अन्य चीज़ों के टुकडे देकर और कचरा फेंककर पर्यटकों ने ही उन्हें बिगाड़ा है। अब सीगल ना सिर्फ लोगों से खाना छीन लेते हैं बल्कि उन्हें डरा भी देते हैं। हालिया शोध से पता चला है कि सीगल को रोकने का सबसे अच्छा तरीका है - उन्हें घूरना।

घूरने पर ज़्यादातर सीगल खाना छोड़कर उड़ जाते हैं। कुछ सीगल पास आने में झिझकते हैं और खाने के पास आने में 21 सेकैंड का समय ज़्यादा लेते हैं। बहुत ही कम ऐसे हैं जो घूरने पर भी बिना डरे, खाने के पास आ जाते हैं। मज़े की बात है कि किसी अन्य जानवर को शायद इस तरह रोका नहीं जा सकता है। बन्दर तो घूरने पर गुस्सा हो जाते हैं और हमला भी कर सकते हैं।

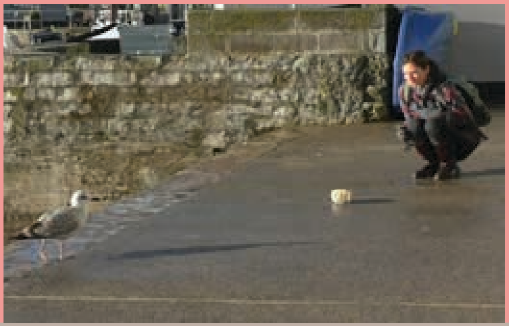

चित्र: आर्णव, चौथी, मंज़िल संस्था, दिल्ली

जंगल की सैर

कनिष्क मालवीय
तीसरी, तालीम डेमोक्रेटिक स्कूल भोपाल, मध्य प्रदेश

चिंटू अपने पापा के साथ टैक्सी में बैठकर जंगल में कैम्पिंग करने आया था। जंगल में एक तालाब था। तालाब के किनारे उन्होंने टैंट लगाया और तालाब में मछली पकड़ने लगे। मछलियाँ पकड़ते-पकड़ते शाम हो गई। अब उन्होंने मछलियाँ भूनकर खाईं और टैंट में सो गए। अगली सुबह जब वो घर वापस जा रहे थे तब उन्होंने देखा एक पेड़ के नीचे एक शेर सो रहा था। चिंटू ज़ोर-से चिल्ला पड़ा। शेर की नींद टूट गई। शेर उनके पीछे पड़ गया। चिंटू के पापा ने गाड़ी की स्पीड तेज़ कर ली। थोड़े ही आगे चले थे कि सामने एक बाघ आ गया। पीछे शेर, आगे बाघ, अब क्या करें चिंटू और चिंटू के पापा। डर के मारे उनकी तो जान निकली जा रही थी। इतने में तालाब से एक मगरमच्छ निकलकर ऊपर आ गया। शेर और बाघ ने मगरमच्छ की तरफ देखा और उसकी ओर छलाँग लगा दी। यही मौका देखकर चिंटू के पापा ने गाड़ी भगा ली और जंगल से बाहर निकल गए। चिंटू बोला- जान बची तो लाखों पाए।

नैना का सपना

शीतल, सागर, मध्य प्रदेश

चित्र: त्विशा, आठ वर्ष, पूर्णा लर्निंग सेंटर, बेंगलुरु, कर्नाटका

एक लड़की का नाम था नैना। उसने रात को एक सपना देखा। उसने सपने में देखा कि उसके चार हाथ हैं। उसने चार हाथ का क्या किया। उसने सोचा कि एक हाथ से पढ़ेंगे, दूसरे हाथ से खाना बनाएँगे। तीसरे हाथ से सब्ज़ी काटेंगे और चौथे हाथ से बहन को खिलाएँगे। सुबह होने वाली थी। इतने में उसका सपना टूट गया। जब उसकी नींद खुली तो उसने देखा कि उसके तो दो ही हाथ हैं।

और फिर घर मिल गया

सौरभ निषाद
छठवीं, संत पीटर्स इंटर कॉलेज मोहनलाल-गंज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

जब मैं एक साल का था तब मैं अपने मम्मी-पापा को देख नहीं पाया था। मेरे घर में जो नाना-नानी थे मैं उन्हीं को अपने मम्मी-पापा समझता था। जब पाँच साल का हुआ तो मुझे मेरे भाई-बहन ने बताया कि यह हमारे मम्मी-पापा नहीं है, नाना-नानी हैं। कुछ सालों बाद नाना-नानी भी गुज़र गए। और छह महीने बाद बहन भी। फिर हमारे दो सौतेले भाई हमें सँभालने के लिए आए। उन्होंने तीन-चार दिन तो हमें अच्छे-से रखा फिर होटल में काम करने के लिए भेजने लगे। और हर दिन हमें बहुत मारते। तो हम दोनों भाइयों ने एक प्लान बनाया कि हम पुलिस के पास जाएँगे। प्लान कामयाब हो गया और पुलिस ने उन दोनों को हमारे घर से भगा दिया। फिर हमारे बुआ-फूफा हमें अपने बच्चों की तरह रखने लगे। उन्होंने हमें बहुत दिनों अच्छे-से रखा। लेकिन वो भी हमें रखते-रखते बोर हो गए। फिर उन्होंने हमें स्टेशन पर छोड़ दिया। फिर जो मुझको पाए उन्होंने मुझे बहुत जगह घुमाया। उन्होंने मेरा घर ढूँढने की बहुत कोशिश की लेकिन पता नहीं चला। फिर एक बार घर ढूँढते हुए दुकान पर मिले एक अंकल से उन्होंने पूछा कि क्या आप इस बच्चे को जानते हो। वो बोले मैं जानता तो नहीं पर कानपुर में एक बच्चा खोया है। हो सकता है यह वही हो। तुम कानपुर जाओ। फिर उन्होंने मुझे वहाँ एक स्कूल दिखाया और पूछा कि कहीं यही तो तुम्हारा स्कूल नहीं। मैंने कहा कि शायद यही है। फिर मेरा घर भी मिल गया। और मेरा भाई मुझे देखकर रोने लगा। उसके बाद मुझे व मेरे भाई को होस्टल में पढ़ने के लिए भेज दिया गया।

मेरा पन्ना

चित्र: अभिषेक, दूसरी, इधा फाउण्डेशन, गुरुग्राम, हरियाणा

शिक्षक-प्रशिक्षक की भूमिका में अवसर

Azim Premji Foundation

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन विभिन्न राज्यों में अपने जिला संस्थानों में कार्य करने हेतु शिक्षक प्रशिक्षक पद के लिए आवेदन आमंत्रित कर रहा है।

शिक्षक प्रशिक्षक की भूमिका: सरकारी स्कूलों की प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं में अध्यापन कर रहे शिक्षकों का सतत् क्षमता संवर्धन।

आवश्यक योग्यता: स्नातक / स्नातकोत्तर

अनुभव: किसी प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, महाविद्यालय या अन्य शिक्षण संस्थानों में कम से कम दो वर्ष के शिक्षण कार्य का अनुभव अनिवार्य।

नोट - पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त लोगों के लिए अनुभव आवश्यक नहीं है।

शिक्षा से जुड़ी गैर सरकारी संस्थाओं में कार्यानुभव रखने वाले व्यक्ति भी आवेदन कर सकते हैं। कम से कम दो वर्ष का फील्ड में कार्य करने का अनुभव आवश्यक।

चयन प्रक्रिया: लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार

परीक्षा तिथि: 22 सितंबर एवं 20 अक्टूबर

इच्छुक अभ्यर्थी निम्न वेबलिंक पर अपना पंजीकरण (ऑनलाइन) कर सकते हैं।

https://bit.ly/2Mx2kwb

अधिक जानकारी के लिए https://azimpremjifoundation.org/career-list एवं टोल फ्री नंबर-18002740101 (सोमवार-शुक्रवार, 9 A.M. - 6 P.M.) पर संपर्क कर सकते हैं।

माथापच्ची

2. तुम्हारे सामने तीन बक्से हैं जिनमें से किसी एक में खिलौने वाली कार है। तुम्हें पता करना है कि कार किस बक्से में है। तुम्हारी मदद के लिए तीनों बक्सों पर चिप्पी लगी हैं, लेकिन तीनों में से केवल एक ही चिप्पी सही है। तुम कौन-से बक्से को खोलोगे?

1. कितने गोलों के अन्दर गुलाबी बिन्दु हैं?

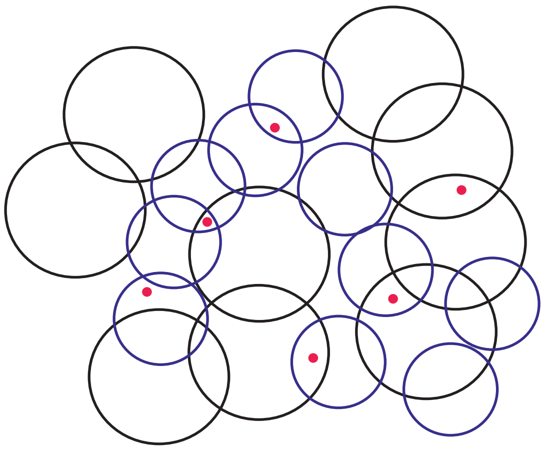

3. दी गई आकृति के चार टुकड़े इस तरह करना है कि उन टुकड़ों को जोड़ने पर एक चौकोर बन जाए। कैसे करोगे? (सुझाव - दी गई आकृति को ग्राफ पेपर पर बनाकर सवाल का हल निकालने की कोशिश करना।)

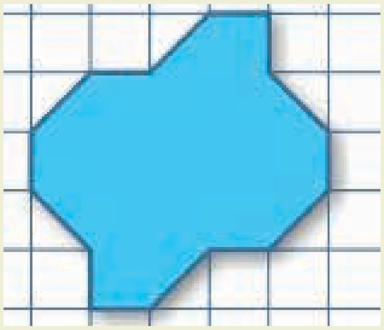

4. अयान ने ज़ोया से कहा कि मेरी इस बोतल में एक ऐसा घोल है जो हर उस चीज़ को घोल देता है जिसे वह छूता है। ज़ोया तुरन्त समझ गई कि अयान झूठ बोल रहा है, कैसे?

5. एक व्यक्ति को मौत की सज़ा सुनाई गई। जज ने उससे पूछा कि तुम किस तरह मरना पसन्द करोगे, बताओ। उसने कुछ ऐसा जवाब दिया कि जज ने उसे माफ कर दिया। उसने क्या जवाब दिया होगा?

6. एक गाय घास चरते-चरते 100 मीटर उत्तर की ओर जाती है। उसके बाद 50 मीटर पूर्व की ओर, फिर 80 मीटर दक्षिण की ओर जाती है। आखिरी में 20 मीटर पश्चिम की ओर जाती है तो बताओ कि गाय की पूँछ किस तरफ होगी?

7. एक हाथी यदि तालाब में डूबने लगे तो बाहर कैसे निकलेगा?

फटाफट बताओ -

बाल नोचे, कपड़े फाड़े, मोती लिए उतार
उत्तर बतलाने के लिए, क्या हो तुम तैयार

(भुट्टा)

कमर बाँध कोने में खड़ी
सबको ज़रूरत इसकी पड़ी

(झाड़ू)

सर पर ताज, गले में थैला
उसका नाम बड़ा अलबेला

(मुर्गा)

माथापच्ची जवाब

1. 12 गोलों में।

2. बक्सा नम्बर 2 को। यदि कार पहले बक्से में होती तो बक्सा नम्बर 1 व 2, दोनों की चिप्पी सही हो जाती। इसी तरह यदि कार बक्सा नम्बर 3 में होती तो बक्सा नम्बर 2 व 3 दोनों की चिप्पी सही हो जाती। इसलिए कार केवल बक्सा नम्बर 2 में ही हो सकती है। इस सूरत में केवल बक्सा नम्बर 3 की चिप्पी ही सही होगी।

3.

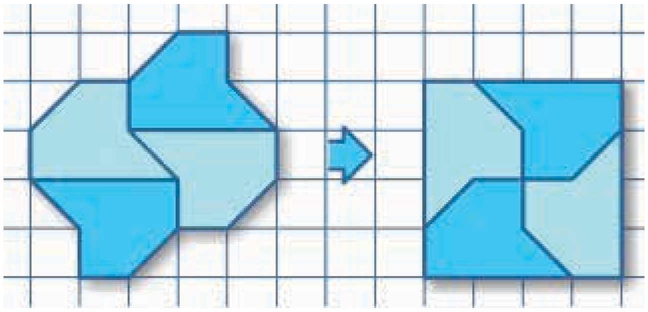

4. यदि ऐसा कोई घोल होता तो उसे किसी भी बरतन में रखना सम्भव नहीं होता क्योंकि बरतन से छूते ही वह उसे घोल देता।

5. उसने कहा कि वह बूढ़ा होकर मरना चाहता है।

6. गाय चाहे जहाँ भी जाए उसकी पूँछ हमेशा नीचे की तरफ ही होगी।

7. गीला होकर।

भूलभुलैया का जवाब

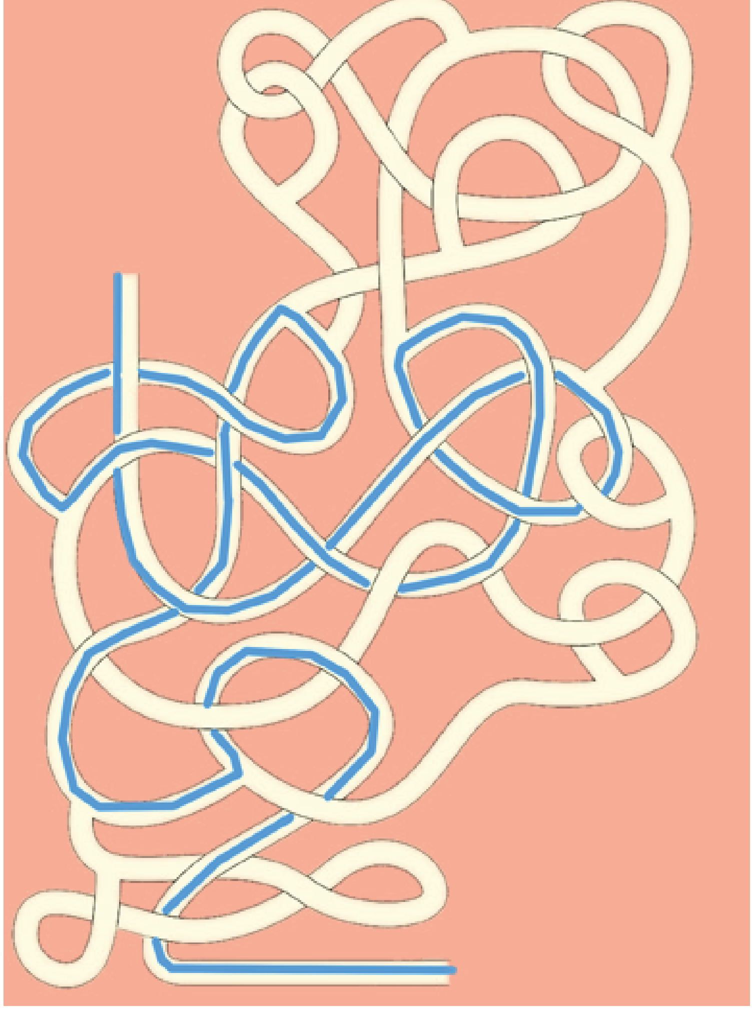

गणित है मज़ेदार: उत्तर

पहले पैटर्न के लिए, तीसवें चित्र में 91 और सौवें चित्र में 301 तीलियाँ होंगी।

दूसरे पैटर्न के लिए, चालीसवें चित्र में 83 व पचासवें चित्र में 103 कंचे होंगे।

अगस्त की चित्र पहेली का जवाब

1हा	2ट		3बे	र		4द	वा	5त
	6मा	चि	स		7टं			र
	ट		8न	9म	की	10न		का
11द	र	12जी		सा		13ट	14प	री
रा		15प	16ती	ला			कौ	
ती			त		17प	ग	ड़ी	
	18अ	19चा	र		त्त			20ख
21काँ		व		22क	ल	23म		जू
24च	प्प	ल		द्दू		25ग	ट्ठ	र

सुडोकू-22 का जवाब

8	6	7	3	1	9	2	4	5
1	2	5	8	4	7	6	3	9
3	9	4	5	2	6	7	1	8
4	1	9	7	8	2	5	6	3
5	7	8	1	6	3	9	2	4
6	3	2	4	9	5	1	8	7
2	4	1	9	7	8	3	5	6
7	8	3	6	5	1	4	9	2
9	5	6	2	3	4	8	7	1

चित्र पहेली
बाएँ से दाएँ
ऊपर से नीचे
Receipt Voucher
62
km

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20

चित्र: हबीब अली

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म. प्र.
से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन